आधी दुनिया

वर्ष-26, अंक - 4, अक्टूबर-दिसंबर 2020

महिला शिक्षण सामग्री

उद्यमिता से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ती झारखंडी महिलाएं

जाहिल के बाने

मैं असभ्य हूँ क्योंकि खुले नंगे पाँवों चलता हूँ
मैं असभ्य हूँ क्योंकि धूल की गोदी में पलता हूँ
मैं असभ्य हूँ क्योंकि चीर कर धरती धान उगाता हूँ
मैं असभ्य हूँ क्योंकि ढोल पर बहुत जोर से गाता हूँ

आप सभ्य हैं क्योंकि हवा में उड़ जाते हैं ऊपर
आप सभ्य हैं क्योंकि आग बरसा देते हैं भू पर
आप सभ्य हैं क्योंकि धान से भरी आपकी कोठी
आप सभ्य हैं क्योंकि जोर से पढ़ पाते हैं पोथी
आप सभ्य हैं क्योंकि आपके कपड़े स्वयं बने हैं
आप सभ्य हैं क्योंकि जबड़े खून सने हैं

आप बड़े चिंतित हैं मेरे पिछड़ेपन के मारे
आप सोचते हैं कि सीखता यह भी ढंग हमारे

मैं उतारना नहीं चाहता जाहिल अपने बाने
धोती-कुरता बहुत जोर से लिपटाये हूँ याने!

- भवानी प्रसाद मिश्र

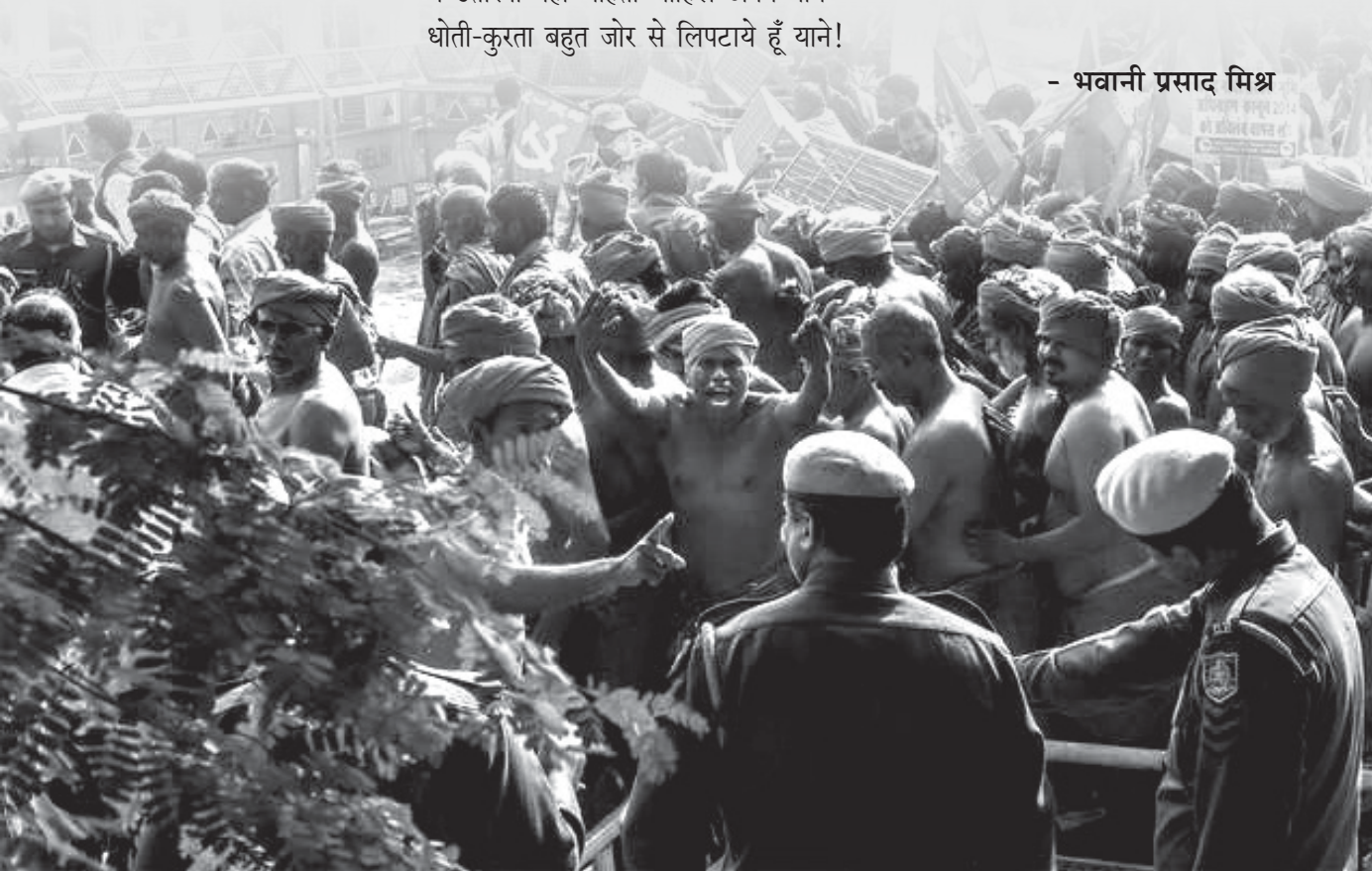

वर्ष-24, अंक -4, अक्टूबर-दिसंबर 2020

आधी दुनिया

संपादक
रोज केरकेट्टा

संपादक मंडल
सालगे मार्डी
सुनील मिंज
श्रावणी
शशि बारला

कलापक्ष
इंडिजिनोग्राफिक्स

संपादन कार्यालय
संवाद
203/ए, उर्मिला इन्क्लेव
पीस रोड, लालपुर
रांची - 834001 (झारखंड)
फोन - 0651-2530356
E-mail : **sarjomsamvad@gmail.com**
Website : **www.samvad.net**

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं, उनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

रोज केरकेट्टा द्वारा संपादित एवं प्रकाशित तथा कैलाश पेपर कन्वर्सन, रांची द्वारा मुद्रित

सीमित प्रसार

03 देशज खानपान की विधा से स्वावलंबन की ओर **मनोनीत रेबेका तोपनो**
05 लघु उद्यमिता से स्वावलंबी बनती आदिवासी महिलाएं **सुनीता मुर्मू**
07 नवजीवन कोष : बढ़ते स्वावलंबन की ओर **सावित्री देवी**
08 मूढ़ी व्यवसाय से बेहतर भविष्य की ओर **सावित्री देवी**
09 अपनी पहचान बनाने को प्रतिबद्ध **पारा मार्डी**
10 स्वरोजगार की ओर बढ़ते कदम **सालगे मार्डी**
12 काम का कोई जेन्डर नहीं होता **मालती कुमारी**
13 संघर्ष और रचना साथ-साथ **सिमती सरदार**
15 अजम एम्बा : आदिवासी 'स्लोफूड मूवमेंट' का एक भाग **अरूणा तिर्की**
18 कला मेरे जीवन में सर्वोपरि **डॉ. अंजु कुमारी साहु**
20 सिरेमिक पॉटरी : शौक से व्यवसाय **अपर्णा चम्पिया**
22 कारवां बढ़ता रहे **तारा देवी**
24 राशन दुकान ने बदली किस्मत **रीना देवी**
25 अपनी राह तलाशती महिलाएं **कोर्दूला कुजूर**
28 समूह से मिला कठिन घड़ी में साथ और खुद का रोजगार
29 ज्योति के आइडिया से समूह को मिलती है व्यापार की समझ **शिकोह अलबदर**
32 समूह से मिले कर्ज से खोली दुकान, हुईं आत्मनिर्भर
34 गरीबी को बनाया हथियार समूह ने किया दर्द का उपचार
36 मां ने लिया समूह से ऋण, बेटी को बनाया स्वावलंबी **शिकोह अलबदर**
38 नौकरी न मिली तो शुरू किया बिजनेस, बनीं झारखंड की सफल महिला उद्यमी **श्रीलता बिश्वास**
39 संवाद की गतिविधियां **सीमान्त सुधाकर/महेश मिश्रा**

उद्यमिता से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ती झारखंडी महिलाए

उद्यमिता के माध्यम से समाज और परिवार को सजाने संवारने में झारखंड की महिलाओं का बड़ा योगदान रहा है। एक तरफ जहां यहां की प्रकृति इन्हें इस उद्यम के लिए प्रेरित करती है वहीं दूसरी ओर यहां का सामुदायिक समाज इन्हें इसका अवसर और इजाजत देता है। यह जितना सच यहां के आदिवासी समाज के लिए है उतना ही मूलवासी समाज के लिए भी।

लेकिन कथित विकास के नकारात्मक हस्तक्षेप ने यहां के विभिन्न समुदायों को न सिर्फ प्रभावित किया है बल्कि एक तरह से छिन्न-भिन्न करके रख दिया है। विस्थापन और पलायन अब यहां की नियति बन गई है। इसका सबसे बुरा प्रभाव महिलाओं पर पड़ा है। लाखों की संख्या में यहां की महिलाएं भी पलायन करने को विवश हुई हैं। इस कड़वे सच को कोविड-19 के दौरान हुए लॉकडाऊन ने उजागर कर पूरे समाज को झकझोर कर रख दिया।

इस विषम परिस्थिति में भी यहां की महिलाओं ने अपनी हिम्मत और हूनर का साथ नहीं छोड़ा।समूह के अभिक्रम, व्यक्ति की सृजनात्मक और समुदाय के सहयोग के बल पर बहुत सारी महिलाओं ने न सिर्फ परिवार को संकट से उबार लिया बल्कि समुदाय को भी एक दिशा दिखलाई।

इसबार की 'आधी दुनिया' का यह अंक उन महिलाओं का एक दस्तावेज है जिन्होंने समाज में उदाहरण पेश किए हैं। इन उदाहरणों से यह साफ झलकता है कि महिलाएं अगर ठान लेती हैं तो धारा के विरुद्ध चलकर भी समाज को एक नयी दिशा देती हैं। इनके छोटे-छोटे अभिक्रम से महज इनका ही आत्मविश्वास नहीं बढ़ता है वरन् परिवार और समाज को आत्मनिर्भर बनने की राह भी दिखाती हैं।

इसलिए किसी देश को अपना समुचित विकास करना हो तो उस देश के शासकों को सबसे पहले महिलाओं को संबंधित निर्णय प्रक्रिया में शामिल करने की एक सजग पहल करनी चाहिए। महिलाओं की दृष्टि, समाज के प्रति उनसबों की सजगता और बच्चों के प्रति संवेदनशीलता विकास को एक नई दिशा दे सकती है। ऐसा इस अंक में संग्रहित उद्यमिता के आलेखों के आधार पर कहा जा सकता है। आशा है पाठक इसे गंभीरता से लेंगे।

देशज खानपान की विधा से स्वावलंबन की ओर

मनोनीत रेबेका तोपनो

खूंटी जिले का एक गांव है निचितपुर। मेरा (मनोनीत) जन्म तो निचितपुर में हुआ पर मेरी शिक्षा-दीक्षा गिरीडीह में हुई। गिरिडीह में मेरे पिताजी सी.सी.एल. में कार्य करते थे। जब मैं आठ बरस की थी पिताजी अपने साथ मुझे गिरिडीह ले आये। मेरे अन्य भाई-बहन मां के साथ निचितपुर में ही रह गये। ग्रेजुएशन पास करने के पश्चात मेरा संपर्क स्वयंसेवी संस्था 'जुड़ाव' से हुई। 'जुड़ाव' में कार्य करने के दौरान मुझे आदिवासियत, आदिवासी संस्कृति, आदिवासी दर्शन आदि जानने समझने का मौका मिला। यहीं पर कार्य करते मेरी शादी भी हुई। शादी मैंने अपने पसंद के लड़के से अपनी मर्जी से की।

शादी के बाद मैं रांची आकर पुंदाग में रहने लगी। पति इवेंट फोटोग्राफर थे। एक स्टूडियो भी था। मैं सहायक के साथ स्टूडियो संभालती थी। समय-समय पर महिलाओं का समूह बनाती, उनके हक अधिकारों के लिए उन्हें जागरुक करते भी रहती थी। दिन अच्छे से कट रहे थे पर होनी को कौन टाल सकता है? अचानक मेरे ऊपर पहाड़ टूट पड़ा। मेरे पति का देहांत बीमारी से हो गया। दो छोटे बच्चे थे, परिवार चलाने की जिम्मेवारी अब मेरे कंधों पर आ पड़ी। मैं वापस अपने मायके भी नहीं जा सकती थी, न ही ससुराल में भी रहना संभव था। मैंने अपने बलबूते अपने पैरो पर खड़ा होने का निर्णय लिया। स्टूडियो को फिर से चलाने की कोशिश की। पर न मैं पेशेवर फोटोग्राफर थी न ही मेरे सहयोगी ही पारंगत थे। लिहाजा हमें लोगों की बातें प्रायः सुनना पड़ता था और सिर्फ पासपोर्ट फोटो के सहारे घर भी चलाना बहुत मुश्किल हो रहा था। बच्चों को स्कूल पहुंचाना, स्कूल से वापस लाना, फिर स्टूडियो संभालना शारीरिक मानसिक दोनों स्थिति से मैं थक जाती। स्टूडियो से वापस बच्चे को गोद में लेकर घर पैदल ही जाना पड़ता

था क्योंकि बच्चे भी स्कूल से वापस आकर स्टूडियो में ही रहते थे। लिहाजा स्टूडियो को बंद करना पड़ा। फिर घर में ही एक छोटी-सी दुकान खोली। पूंजी के अभाव में दुकान में ज्यादा सामान भी नहीं रख पा रही थी। किसी तरह दुकान के भरोसे घर चल रहा था। बीच-बीच में कभी साथी भी कुछ मदद कर दिया करते थे। दिन किसी तरह कट रहे थे। इसी बीच एक दिन मैं रांची स्थित ट्राइफेड के कार्यालय में किसी के साथ गई। उसी समय ट्राइफेड द्वारा आड्रे हाउस में आदि महोत्सव का आयोजन किया जा रहा था। वहीं पर दिलेश्वर लोहरा जो पेशे से मूर्त्तिकार हैं, से मुलाकात हुई। उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम मेले में स्टॉल में क्या लगा सकती हो? मैंने कहा कुछ नहीं, मैं तो यहां किसी के साथ में आई थी। उन्होंने मुझसे कहा कि एक स्टॉल है उसमें झारखंडी पारंपरिक व्यंजन का स्टॉल लगा लो। मैंने कहा – ''मैं पारंपरिक व्यंजन बनाना नहीं जानती।'' मैं स्टॉल लगाने को तैयार नहीं हो रही थी। तभी उन्होंने कहा – ''कैसी आदिवासी हो? आदिवासी खाना बनाने नहीं जानती हो।'' उनकी यही बात मेरे दिल को लग गई। मैंने तपाक से उन्हें उत्तर देते हुए बोला – ''स्टॉल दिला दीजिए, मैं तैयार हूं। झारखंडी पारंपरिक भोजन/व्यंजन ही मेरे स्टॉल में रहेगा।''

फिर मैं अपने चार सहयोगी सरोज तेलरा, नीलम विरजिया, आतेन टोपनो और अंजू लकड़ा के साथ मेले की तैयारी में लग गई। मेला शुरु हो गया। हमने मेले में स्टॉल लगाया। स्टॉल में गुड़ चाय, चावल का छिलका, रोटी, मड़ुआ छिलका, मड़ुआ रोटी, चावल डुंबु, मड़ुआ डुंबु आदि चीजें बनाकर बिक्री करने लगी। धीरे-धीरे बिक्री बढ़ने लगी। लोग सलाह भी देते कि ऐसे बनाने से और अच्छा बनेगा। ये चीज डालियेगा तो स्वाद और अधिक बढ़ जायेगा। लोगों की सलाह मानकर उसमें सुधार करते गये। करीब 10 दिन तक मेला चला, इन दस दिनों में ही मेरे पकवानों में काफी सुधार आया।

इसके बाद कई सरकारी और गैर सरकारी मेले में स्टॉल लगाने का मौका मिला। कई बार स्टॉल लगाने राज्य के बाहर भी जाने का अवसर मिला। इससे संपर्क भी बढ़ा और नयी-नयी चीजें भी जानने समझने का मौका मिला। हमलोगों ने अपने ब्रांड का नाम रखा 'झारखंडी सिबिल द टेस्ट ऑफ झारखंड''। इस ब्रांड के तहत हमलोग अभी मड़ुआ डुंबु, महुआ लड्डू, मड़ुआ केक, मड़ुआ मोमो, निमकी इत्यादि बनाकर बेचते हैं। बड़े आर्डर मिलने पर रांची के अंदर होम डिलीवरी भी की जाती हैं। शाम को रांची के मोराबादी मैदान में स्टॉल लगाकर इन्हें बेचते भी हैं।

यह व्यवसाय हमारे लिए सिर्फ पैसा कमाने का जरिया नहीं है। इस व्यवसाय के माध्यम से लोगों को अपने खान-पान के प्रति जागरुक तो करते ही हैं, उनकी रुचि को भी बढ़ाने का काम करती हूं। इसके फायदों को लोगों तक पहुंचाना भी हमारा एक मकसद है।

वर्तमान में मैं 'संवाद' से जुड़कर रांची जिले के इटकी प्रखंड में कार्य कर रही हूं। स्थानीय संसाधन का उपयोग करते हुए टिकाऊ आजीविका को स्थापित करने के लिए लोगों को जागरुक करती हूं।

जैविक खेती एवं मोटे अनाजों के उत्पादन करने के लिए लोगों को प्रेरित करती हूं। आगे झारखंड में लगने वाले जतरा, मेले एवं बाजारों में भी झारखंडी पारंपरिक व्यंजनों की दुकान लगाने की योजना है ताकि अन्य लोग भी आगे आयें। लोगों को पौष्टिक भोजन भी मिले एवं हमारे लोग आर्थिक रुप से स्वावलंबी भी हो। ■

लघु उद्यमिता से स्वावलंबी बनती आदिवासी महिलाएं

सुनीता मुर्मू

मैं सुनीता मुर्मू (घर का नाम राखी) मेड़िया गांव की रहने वाली हूं। मेड़िया पूर्वी सिंहभूम जिले के मुसाबनी प्रखंड के अंतर्गत आता है। मेरे पिता शिबूराम हांसदा खेतीबाड़ी कर अपना परिवार चलाते हैं। दादाजी के छोटे भाई को कोई संतान नहीं था। उन्होंने मेरे पिता को गोद लिया था। वे सर्वेयर इंजीनियर थे। अतः शहर में रहकर प्राइवेट कंपनी में काम करते थे। फलस्वरूप मेरे बाबा को ही खेतीबाड़ी का काम संभालना पड़ता। मेरी मां (मुन्नी माला हांसदा) भी उन्हें सहयोग करती।

पहले आंगनबाड़ी नहीं हुआ करता था। तीन साल की उम्र से ही मैंने गांव के ही सरकारी स्कूल से अपनी पढ़ाई शुरू की। शिवलाल उच्च विद्यालय से मैंने मैट्रिक की परीक्षा पास की एवं घाटशिला से एन्थ्रोपोलोजी विषय से स्नातक किया। इसके पश्चात मैं इग्नू से बी.ए.डी. कोर्स की पढ़ाई भी की। भाई-बहनों में मैं बड़ी थी, अतः घर के कार्यों के अतिरिक्त भाईयों की देखभाल की जिम्मेदारी भी मेरे ही कंधों पर थी। सभी जिम्मेवारी को पूरा करते हुए ही मैंने अपनी पढ़ाई जारी रखी। 1992 के आसपास जब मैं मैट्रिक की छात्रा थी तो मेरी छोटी दादी जो दादा जी के साथ शहर (महाराष्ट्र) में रहती थी, अचानक तबियत ज्यादा खराब हो गई। उनकी देखभाल के लिए मुझे वहां जाना पड़ा। दादी के सहयोग से मैंने सिलाई-कटाई का प्रशिक्षण लिया और घर में ही थोक पर कपड़ा सिलना शुरू किया। चूंकि दादा प्राइवेट कंपनी में कार्य करते थे। उन्हें समय पर पैसे नहीं मिलते थे। मेरा छोटा भाई भी उन्हीं के साथ रहकर पढ़ाई करता था। हम दोनों भाई-बहन कपड़ा सिलते थे इससे जो आमदनी होती, दादा जी को घर चलाने में मदद भी करते। इसी समय से मेरे जीवन में आर्थिक स्वावलंबी बनने और कुछ उपार्जन करने को

दिशा मिली। सिलाई के साथ-साथ हम भाई-बहन की पढ़ाई भी जारी रही। मैंने घाटशिला कॉलेज में एडमिशन लिया और परीक्षा के समय आकर परीक्षा देती। महाराष्ट्र के मालड वेस्ट में मैं सात साल दादा-दादी के साथ रही। इन सात सालों मैं सिलाई करती रही और उसमें पारंगत हो गई। इसके बाद मैं गांव आ गई। पर, सिलाई को मैंने नहीं छोड़ा। मैं स्वयं तो सिलाई करती और साथ में अपने सहेलियों को भी सिलाई सिखाती।

इसी बीच मेरी शादी गांव के ही एक लड़के से हो गई। शादी के बाद भी मैंने सिलाई नहीं छोड़ी। सास-ससुर दोनों माइंस में काम करते थे। मेरे पति कुछ काम नहीं करते थे। पूरे घर के कामों को समाप्त करके बचे समय में मैं सिलाई करती। वर्ष 1997 में मैं मां बनी। बच्चे को संभालते हुए भी मैंने सिलाई जारी रखी। मेरे पास आमदनी का यही एक मात्र जरिया था। किसी तरह मेरे दिन कट रहे थे। मेरे मन में एक ख्याल आया कि क्यों न हम समूह बनाकर कार्य करें ताकि अन्य महिलाओं को भी कुछ लाभ मिले। मैं सालगे मुर्मू, सालगे मार्डी, फूलकुमारी, छिता सभी ने आपस में चर्चा की और समूह का निर्माण किया। उस समय तक हमारे इलाके में स्वयं सहायता समूह की कोई चर्चा तक नहीं की। समूह के निर्माण के पश्चात हमने सिलाई करने का निर्णय लिया। समूह का नाम हमने

दिया 'ग्रामीण महिला विकास मंच'। पर सिलाई करने के लिए मशीन चाहिए थी, मशीन हमारे पास नहीं थी। छिता मार्डी ने अपनी मशीन दी और गांव के ही लोहिया भवन के एक कमरा में सीखने सिखाने की प्रक्रिया चल पड़ी। फिर सालगे मार्डी और मैंने भी मशीन खरीदकर काम को आगे बढ़ाया। हमारे काम को देखते हुए सरकार के तरफ से तीन सिलाई मशीन अनुदान में मिली। इसके पश्चात हमारे क्षेत्र के कांग्रेस विधायक प्रदीप बालमुचु ने भी एक मशीन हमारे समूह को प्रदान किया। समूह के पैसे से हमलोगों ने फिर एक सिलाई मशीन खरीदी। अभी सभी महिलायें मिलकर पेटी कोट, ब्लाउज, सलवार सूट, जूट बैग, कपड़ा बैग इत्यादि बनाती हैं। 20 प्रतिशत आमदनी समूह के विकास के लिए रखा जाता है। गांव की अन्य महिलाओं एवं किशोरियों को भी बहुत मामूली शुल्क 100 रु. लेकर सिलाई-कटाई का प्रशिक्षण भी हमारे केन्द्र से दिया जाता है। हमारे केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर सैकड़ों लड़कियां आर्थिक स्वावलंबन की ओर कदम बढ़ा चुकी है। हम समूह की महिलायें आपस में मिलकर जैविक खेती को बढ़ावा देने का कार्य भी करती हैं। हम सामूहिक जैविक खेती करते ही हैं, अन्य को भी जैविक खेती करने के लिए प्रेरित करते हैं। अभी कोरोना के समय में हम महिलायें लोगों को मास्क बनाकर दे रहे हैं। जो पैसे दे पाते हैं, वे देते हैं। जो पैसे दे नहीं पाते हैं, उन्हें निःशुल्क भी दिया जाता हैं। कई गैर सरकारी संस्थान एवं सरकारी संस्थान से हमें थोक में मास्क बनाने का आर्डर भी मिला। अभी हमारे समूह की महिलायें मशरूम का उत्पादन कर रही हैं।

अभी केंद्र की पूरी जिम्मेवारी हम तीन महिलाओं मैं सुनीता मुर्मू, फूलमनी हांसदा एवं बसंती हांसदा के कंधों पर है। आर्थिक उपार्जन के साथ-साथ महिलाओं को संगठित कर उनमें नेतृत्व क्षमता का विकास कैसे हो, इस पर भी हमारा समूह गंभीर है। समानता पर आधारित समाज निर्माण की परिकल्पना के साथ हम आगे बढ़ चुके हैं, क्या आप हमारा साथ देंगे? ■

नवजीवन कोष : बढ़ते स्वावलंबन की ओर

सावित्री देवी

देवघर जिला के अंतर्गत मधुपुर प्रखंड सिकटिया पंचायत के ग्राम सिकटिया की आदिवासी समुदाय की महिलायें प्रतिदिन बाजार जाकर दतुवन, पत्ता आदि बिक्री करती थीं। इनको बेचने के लिये स्थानीय बाजार के अलावा दूर के बाजार में जाना पड़ता था। आने-जाने के दरम्यान ट्रेन एवं हाट में इन्हें शोषण का शिकार होना पड़ता था।

इन आदिवासी समुदाय की महिलाओं की दिशा और दशा सुधारने हेतु नवजीवन कोष समूह का गठन 28 जनवरी 2008 को किया गया। इससे इनकी आजीविका का आधार सुनिश्चित हुआ और आपसी एकता मजबूत हुई। समूह ने व्यवस्थित तरीके से काम को आगे बढ़ाने का निश्चय किया गया। महिलायें बचत करने लगी। बाद में इन लोगों ने तय किया कि अपने बचत को स्थानीय बैंक में रखा जाय। 10 जुलाई 2008 को वनांचल ग्रामीण बैंक, शाखा जगदीशपुर में इनलोगों ने अपने समूह का खाता खुलवाया। इस समूह में कुल ग्यारह सदस्य हैं - सारोजी देवी (अध्यक्ष), आरती हेम्ब्रम (सचिव), सरिता देवी (कोषाध्यक्ष), बड़की बेसरा, मंगोली हेम्ब्रम, मालती सोरेन, हेनोदी मुर्मू, वहामुनी टुडू, रूपमुनी हेम्ब्रम, विनोदी देवी और सोहा टुडू।

इन लोगों ने अपने आर्थिक स्वावलंबन के लिये जन वितरण प्रणाली की दुकान लेने का मन बनाया। इसके लिये बैठक कर प्रस्ताव लिया और फार्म भरकर मधुपुर के अनुमंडल पदाधिकारी के कार्यालय में जमा किया, फिर महिला प्रचार-प्रसार पदाधिकारी से अनुशंसा कराकर जिला आपूर्त्ति पदाधिकारी देवघर कार्यालय में भिजवाया गया और अंततः राशन दुकान का लाइसेंस प्राप्त किया। 11 अगस्त 2009 से आज तक यह जनवितरण प्रणाली का राशन दुकान सुचारू रूप से समूह द्वारा चलाया जा रहा है। इसके मुनाफे से समूह के सभी सदस्य के लिये दस-दस भरी का चांदी का सिकड़ी बनवाया गया। वर्ष 2020 के दुर्गापूजा में सभी सदस्य आठ भरी का चार-चार चांदी की चूड़ी बनवायी है।

अब इस समूह से जुड़ी महिलायें दतुवन, पत्तल आदि बेचने स्थानीय बाजार अथवा दूसरे शहर नहीं जाती है। अभी ये लोग अपने-अपने खेत और बाड़ी में धान, सब्जी, गेहूं लगाकर अपने आजीविका को सशक्त बनाने में जुटी हुई हैं।

इसके अलावे ये महिलायें ग्राम सभा की बैठक में नियमित भाग लेती हैं। शोषण एवं अत्याचार के खिलाफ आवाज भी उठाती हैं। ये महिलायें अपने-अपने बच्चों को समुचित शिक्षा भी दिलवा रही हैं।

वर्तमान में इस समूह के खाते में रू. 82,764 जमा है। इस बार धनरोपनी के समय पाँच-पाँच हजार रुपया समूह से ऋण लिया है। इस बार धान का पैदावार भी अच्छा हुआ है। इससे उन्हें ऋण लौटाने में कठिनाई भी नहीं हुई। समूह की महिलायें अपने अभिक्रम से स्वावलंबन की ओर आगे बढ़ रही हैं। ■

मूढ़ी व्यवसाय से बेहतर भविष्य की ओर

सावित्री देवी

बत्तीस वर्षीय प्रतिमा देवी देवघर जिले के मधुपुर प्रखंड अंतर्गत पथरोल केवट टोला में रहती है। उसके तीन बच्चे हैं - दो लड़कियां एवं एक लड़का। पति छोटे और सीमांत मतस्य पालन किसान है। परिवार का पूरा खर्चा केवल उनके पति के आय पर निर्भर थी जिसके कारण घर की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब थी। किसी तरह घर का गुजारा चल रहा था। बच्चे शिक्षा से वंचित थे। अपनी घर की इस हालत को देखकर वह हमेशा दुःखी रहती। उसके मन में हमेशा यह मलाल रहता कि हम अपने बच्चों को बुनियादी सुविधायें प्रदान नहीं कर पा रहे हैं जब तक हम उनके बुनियादी जरूरतों को पूरा नहीं करेंगे तो उनका विकास कैसे होगा? अपनी इस व्यथा को उसने गांव की अन्य महिलाओं के समक्ष रखा। महिलाओं ने आपस में तय किया कि क्यों न हम सब मिलकर एक समूह का गठन करें और उसमें थोड़ा-थोड़ा बचत करें। फिर बचत के पैसे से कोई रोजगार करे ताकि उसकी आमदनी से घर की जरूरतों को पूरा कर सकें। सबने मिलकर एक समूह का गठन किया और उसका नाम रखा 'सखी महिला बचत कोष'। 'सखी महिला बचत कोष' की महिलायें आपस में बैठक करती और कुछ पैसे बचत करती। बचत से रोजगार क्या करें और कैसे करें इस पर विचार विमर्श चल ही रहा

था कि कुछ महीने पहले वे सब 'भीमराव अंबेडकर झारखंड दलित समाज विकास समिति', मधुपुर एवं 'संवाद' के संपर्क में आई। शुरूआत से ही प्रतिमा देवी की रूचि व्यवसाय करने के प्रति दिखी। उसके बाद संगठन के द्वारा उसे दो दिन का प्रशिक्षण मूढ़ी बनाने का दिया गया। इसके बाद JDSVS द्वारा आयोजित प्रशिक्षण में भी हिस्सा लिया। प्रशिक्षण के उपरांत उसने एस.एच.जी. की बैठक में प्रशिक्षण की सीख को साझा किया। समूह की आधे सदस्य भी मूढ़ी बनाने वाले काम करने के लिए तैयार हो गये। फिर सभी ने मिलकर मूढ़ी बनाने का काम शुरू किया। आज सफलतापूर्वक महिलायें अपना व्यवसाय चला रही है। वे गांव के बाजार एवं घर-घर जाकर मूढ़ी बेच कर रोजाना 300 रु. तक कमा रही है। इनके काम को देखकर अन्य महिलायें भी इस व्यवसाय में शामिल होना चाहती हैं। अब प्रतिमा अपने जीवन से संतुष्ट है। उनकी पारिवारिक आय में वृद्धि हुई है। रहन-सहन के स्तर में भी बढ़ोत्तरी हुई है। बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी दिला रही है। वह अन्य एस.एच.जी. की महिलाओं को कमाने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। स्वयं तो स्वावलंबी हुई ही है, दूसरी महिलाओं को भी स्वावलंबन की राह पर बढ़ने हेतु प्रेरित कर रही हैं। ■

अपनी पहचान बनाने को प्रतिबद्ध

पारा मार्डी

मैं पारा मार्डी बाड़ेडीह गांव के मध्यम वर्ग आदिवासी संथाल समुदाय की महिला हूं। मध्यम वर्ग के होने के बावजूद माता-पिता ने हमें उच्च शिक्षाएं दी। मैंने अपने मैट्रिक की पढ़ाई संत रोबर्ट स्कूल परसुडीह से की। उसके तुरंत बाद मेरी शादी मातकमडीह में शिशिर कुमार मार्डी के साथ हुई। शादी के बाद भी मैंने अपनी इंटर की पढ़ाई के.एम.पी.एम. कॉलेज जमशेदपुर से किया एवं स्नातक की पढ़ाई लाल बहादुर शास्त्री मेमोरियल कॉलेज, करनडीह से की। गांव की महिलाआं के साथ मिलकर महिला स्वयं सहायता समूह का गठन कर काम करती रही। उसी दौरान मेरा संपर्क 'संवाद' संस्था के साथियों के साथ हुआ। फिर मैं 'संवाद' के कार्यक्रमों में हिस्सा लेने लगी। वर्ष 2015 से 2017 में 'संवाद' द्वारा महिलाओं की आर्थिक स्थिति को बढ़ाने के लिए महिलाओं को सीड मनी के रूप में एक छोटी सी आर्थिक मदद दी गई। मुझे भी मदद मिली। उस पैसे से मैंने सूअर पालन किया। कुछ पूंजी बढ़ने के बाद मुझे लगा कि केवल पशुपालन से काम नहीं बनेगा। मेरी यह भी सोच थी कि मेरी अपनी अलग पहचान बने। इस बीच मैं स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, जिला पूर्वी सिंहभूम, जमशेदपुर से जुड़ी। 'ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान' (RSETI) भारत सरकार के द्वारा चलायी गयी योजना है, जिसमें भारत सरकार, राज्य सरकार, बैंकों की संयुक्त भागीदारी है। 'ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान' ग्रामीण क्षेत्रों में बी.पी.एल. एवं ग्रामीण गरीब परिवारों के बेरोजगार युवक युवतियों को निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान कर स्वरोजगार से जोड़ता है। इस 'ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान' से मैंने महिला वस्त्र निर्माण प्रशिक्षण प्राप्त किया और अपने सिलाई का कार्य शुरू किया। इस दौरान मैंने समिति का कार्य नहीं छोड़ा। बैंक आने-जाने के दौरान मुझे

बैंक से ही पी.एम.जी.पी. लोन के बारे पता चला। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण निर्णय है। इसी पी.एम.जी.पी. से मुझे बैंक ऑफ इंडिया कालिकापुर से लोन मिला। इसी लोन से मैंने कपड़े का व्यवसाय शुरू किया। मैंने सिलाई को भी नहीं छोड़ा है। मैं काफी महिलाओं को ब्लाउज, सूट, सलवार बनाना सिखा चुकी हूं और आगे भी महिलाओं के लिए अपने लिए अपने समाज के लिए कार्य करती रहूंगी। ■

स्वरोजगार की ओर बढ़ते कदम

सालगे मार्डी

बसंती हांसदा पूर्वी सिंहभूम जिले के मुसाबनी प्रखंड के मेड़िया गांव की है। उनके पिता कलकत्ता में नौकरी करते थे। बसंती का जन्म 1972 को फतेहपुर कलकत्ता में हुआ। जब वह पाँच या छह वर्ष की रही होगी उसे उसके पैतृक गांव मेड़िया लाया गया। यहीं पर रहकर उसने 10वीं की परीक्षा दी। अन्य लड़कियों की तरह बसंती की भी शादी कर दी गई। शादी के बाद से ही उसके जीवन में कष्ट शुरू हो गया। ससुराल में उसे शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ित किया जाता रहा। दिन भर हाड़तोड़ मेहनत करने के बावजूद उसे भरपेट खाना भी नहीं दिया जाता था। थोड़ी सी भी गलती होने या न होने पर भी हरदम ताना दिया जाता था। उसके कान प्यार के दो बोल सुनने को भी तरस जाते। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बहाने उसके पति को भी घर से बाहर भेज दिया गया। बसंती की स्थिति बहुत ही खराब हो गई थी, जिस स्थिति में बसंती रह रही थी उस स्थिति में आने पर अन्य महिला कमजोर पड़ जाती पर बसंती ने अपना धैर्य नहीं खोया। किसी तरह कष्ट सहते हुए उसने ससुराल में 6 महीने गुजारे। उसके इस हालत की सूचना जब उसके मायके वाले को मिली तो वे उसे वहां से लिवा आये। जब उसे मायके लाया गया, तब वह बेहोशी की हालत में थी। मायके लाकर उसका इलाज कराया गया। जब वह कुछ

स्वस्थ हुई तो मायके वालों ने निर्णय लिया कि उसे अब वापस ससुराल नहीं भेजेंगे। वह मायके में रहने लगी। किसी तरह उसके दिन बीतने लगे।

पर वैसे बेकार रहना बसंती को अच्छा नहीं लगता। हरदम कुछ करने का उपाय सोचते रहती। वर्ष 1998 में उसके मन में एक ख्याल आया कि क्यों न महिलाओं के एक समूह का गठन किया जाय और कुछ किया जाय ताकि कुछ आमदनी हो। 10 महिलाओं को साथ लेकर उसने एक स्वयं सहायता समूह का गठन किया और उसका नाम रखा ''ग्रामीण महिला विकास मंच''। समूह तो बन गया पर अब आमदनी के लिए कुछ करना था। ऐसे तो बसंती को सिलाई-कढ़ाई करना अच्छा नहीं लगता। पर अपने खर्चे चलाने के लिए उसने समूह के साथ मिलकर कपड़े सिलाई करने का काम करने लगी। सिलाई करते-करते ही उसके दिमाग में बात आई कि क्यों न इसे ही रोजगार का माध्यम बनाया जाय पर रोजगार के लिए सिलाई कटाई में विधिवत प्रशिक्षण लेना भी जरूरी था। उसने मुसाबनी से सिलाई एवं कटिंग का प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के

उपरांत उसके जीवन में नया मोड़ आया। वह आगे बढ़ते गई और फिर उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। समूह के साथ मिलकर वह सिलाई करती तथा अन्य लड़कियों को भी इसका प्रशिक्षण देने लगी। जब बसंती के बारे में गैर सरकारी संगठनों को जानकारी हुई तब वे भी अपने कार्य क्षेत्र के किशोरियों को सिलाई का प्रशिक्षण देने के लिए इन्हें बुलाने लगे। मुसाबनी प्रखंड के प्रशिक्षण केन्द्र में ही 25 किशोरियों को सिलाई कटिंग का दो महीने का आवासीय प्रशिक्षण देने का कार्य बसंती को मिला। वहां प्रशिक्षण देने के पश्चात बसंती ने समूह के महिलाओं के समक्ष प्रस्ताव रखा कि अपने केन्द्र के मार्फत हम सब भी महिलाओं एवं किशोरियों को प्रशिक्षण दें एवं उसे स्वरोजगार से जोड़े। अन्य महिलाओं को बसंती का प्रस्ताव सही लगा। बसंती अपने साथी सुशीला हांसदा, सुशीला मार्डी व फुलमनी के सहयोग से प्रशिक्षण देने का कार्य करने लगी। जो महिलायें एवं लड़कियां सिलाई सीखने आती उससे 50 रु. महीना की मामूली फीस ली जाती जो फीस देने में असमर्थ होते उन्हें निःशुल्क ही प्रशिक्षण दिया जाता। करीब 200 महिलायें इस केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर रोजगार कर रही हैं। बसंती सिलाई से अपनी जीविका तो चला रही है, साथ ही उसकी तरह अन्य महिलाओं को भी स्वावलंबन के लिए प्रेरित कर रही है। गांव के विकास के प्रति भी उसकी सोच स्पष्ट है। अभी पूरे समूह एवं केन्द्र की जिम्मेवारी बसंती के कंधों पर है। आज उसकी आमदनी इतनी है कि अपनी तथा मां के भरण-पोषण करने के साथ-साथ वह बचत भी कर लेती है। वह बहुत खुश है कि ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं होने के बावजूद आज वह आत्मनिर्भर है। उसे किसी के पास हाथ फैलाने की जरूरत नहीं है। उसके कार्यों को देखते हुए पर्यावरण चेतना केन्द्र, सिगदी पोटका की ओर से उसे ''नेतृत्वकारी सफल महिला'' के सम्मान से सम्मानित किया गया है। बसंती बहुत बड़ा बिजनेस वुमेन तो नहीं पर अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा है। अपने साथ-साथ दूसरों की जीविका को सुधारना आज उसके जीवन का मूल ध्येय बन चुका है। ■

काम का कोई जेन्डर नहीं होता

मालती कुमारी

हमारा समाज पितृसत्तात्मक समाज है। यहां श्रम का विभाजन लिंग आधारित है। कुछ काम पुरूषों के मान लिये गये हैं तो कुछ काम महिलाओं की जिम्मेदारी के अंतर्गत आता है। ऐसा ही एक काम है राजमिस्त्री का इसे हमेशा से ही पुरुषों द्वारा किया जाने वाला कार्य माना जाता रहा है। महिलायें इसके सहयोगी के रूप में हमेशा रेजा का काम करती दिखाई पड़ती है। 38 वर्षीय बसंती देवी जो गुमला जिले के सिसई प्रखंड अवस्थित लकेया गांव में रहती हैं उसने अपने काम से यह चरितार्थ कर दिखाया है कि काम या सपनों का कोई जेन्डर नहीं होता। अन्य लड़कियों की तरह बसंती भी शादी करके ससुराल पालकोट आई। जो गुमला जिले में ही पड़ता है। पति किसान थे उसकी आजीविका खेती किसानी से अच्छे से चल जाती थी पर कहा जाता है कि अच्छे दिन ज्यादा देर तक टिकते नहीं है बसंती पर भी यह लागू हो गया। पति को शराब की लत लग गई और आये दिन वह उस पर अत्याचार करने लगा। इसी बीच वह गर्भवती हो गई। बेटे के जन्म के बाद पति के अत्याचार से तंग आकर वह मायके आ गई। उसका मायका बसिया प्रखंड अंतर्गत तमरला बानुटोली में है। शादी के बाद जब बेटी मायके आकर रहती है तो मायके वाले भी उसे बोझ समझने लगते हैं। बसंती इसको भलिभांति जानती थी इसलिए उसने अपनी आजीविका चलाने के लिए स्वयं ही कुछ करने का निश्चय किया। वह अपने मायके बाकुटोली से सिसई प्रखंड स्थित लकेया गांव आ गई और वहां किराया का मकान लेकर रहने लगी। पहले तो उसे घर से निकलने में डर और झिझक लगता था पर धीरे-धीरे उसने डर और झिझक को परे धकेलते हुए घर से निकलना शुरू किया एवं रेजा का कार्य करने लगी। रेजा का काम ज्यादातर राजमिस्त्री का सहयोग करना होता

है। राजमिस्त्री का सहयोग करते हुए उसने भी राजमिस्त्री का काम सीख लिया। रेजा की मजदूरी भी कम होती है। बसंती के मन में आया कि क्यों न मैं भी राजमिस्त्री का कार्य करूं। इससे मुझे पैसे भी ज्यादा मिलेंगे और समाज में सम्मान भी मिलेगा। वर्ष 2017 से वह राजमिस्त्री का कार्य करने लगी। इससे उसकी आमदनी बढ़ी एवं आजीविका भी अच्छे से चलने लगी। अपने बलबूते बसंती अपने बेटे को पढ़ा लिखा भी रही है। अभी उसका बेटा दसवीं कक्षा में पढ़ाई कर रहा है, पर बसंती की इच्छा है कि वह पढ़ लिख कर बड़ा आदमी बने। अपने दमखम से बसंती ने यह साबित कर दिया कि लिंग आधारित श्रम विभाजन को चुनौती दी जा सकती है यह कठिन जरूर है पर नामुमकिन नहीं। ■

संघर्ष और रचना साथ-साथ

सिमती सरदार

मैं सिमती सरदार बड़ा सिगदी पोटका पूर्वी सिंहभूम की रहनेवाली हूं। मेरा परिवार आंदोलनकारियों का परिवार है इसलिए बचपन से ही मुझे भी आंदोलन में भाग लेना, अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाना अच्छा लगता। वर्ष 1987 में झारखंड मुक्ति आंदोलन के बैनर तले एक पदयात्रा गुवा से जमशेदपुर तक आयोजित की गई। इसमें मेरे घर से भैया दिलीप कुमार एवं बहनें मालती एवं मेनका ने भाग लिया। झारखंड मुक्ति आंदोलन कई आंदोलन का सामूहिक बैनर था। इसमें छात्र युवा संघर्ष वाहिनी, लोक समिति, महिला संघर्ष वाहिनी, कोल्हान रक्षा संघ, कोल्हान मजदूर यूनियन आदि शामिल थे। मैं उस समय स्कूल की छात्रा थी। बैनर में लिखे नामों को मैं रटने लगी। भैया एवं दीदी लोग जब घर से पदयात्रा में जाने के लिए घर से निकले मेरा मन भी बैचेन हो गया। मैं सोचने लगी काश मैं भी पदयात्रा में शामिल हो पाती। मैंने जिद करके सिदू दा के साथ यात्रा के अंतिम दिन भाग लिया। उस दिन यह यात्रा राजनगर से जमशेदपुर तक आयोजित थी। 1990 में वन अधिकार को लेकर भी एक रैली पटना में आयोजित थी, वहां जाने के लिए भी मैंने जिद किया और मुढ़ी-चूड़ा का पोटली बांधकर लाल डिब्बा के इंतजार में रोड में आकर खड़ी हो गई। लाल डिब्बा एक बस का नाम है, जो हाता से मुसाबनी तक चलती थी। बस से टाटानगर पहुंचकर नारा लगाते हुए ट्रेन में बैठ गई। ईचा खड़कई बांध विरोधी रैली में भी मैंने भाग लिया। मुझे रैलियों में नारा लगाने में बहुत मजा आता। मैं जब मैट्रिक में थी उसी समय पोटका प्रखंड महिला संघर्ष वाहिनी संगठन से जुड़ गई। हमारे घर पर ही छात्र युवा संघर्ष वाहिनी और महिला संघर्ष वाहिनी का कार्यालय स्थित था। मैं आंदोलनों में भाग लेती रही पर पढ़ाई को

नहीं छोड़ा। पढ़ाई के साथ-साथ टाइपिंग भी सीखने लगी। जब टाईपिंग सीख ली तब वर्ष 1996 में पर्यावरण चेतना केन्द्र में पार्ट टाइम टाइपिस्ट के पद पर कार्य करने लगी। उस समय टाइप करने पर मुझे महीने 300 रुपये मिलते थे। संस्था में टाइपिस्ट का कार्य करते हुए घर में खेती के काम में सहयोग करने लगी। खेती का बढ़ता काम देखकर मैंने टाइपिंग छोड़ दी एवं पूर्णरूपेण खेती करने लगी। मैंने सब्जी उगाना शुरू किया, इसमें प्रति सप्ताह 250-300 रुपये की आमदनी भी होने लगी एवं परिवार के लोगों को ताजा एवं हरी सब्जी खिलाने भी लगी। मैंने 10 कट्ठे में खेती शुरू किया था जिसे बाद में एक बीघा में करने लगी परंतु जितना उपज होना था उतना नहीं हो पाया। घर से सहयोग भी नहीं मिलता था और गांव में भी मजदूर नहीं ही मिल पाते थे क्योंकि लोग मजदूरी करने बाहर जाना ज्यादा पसंद करते थे। उसी समय आसनबनी में स्टील प्लांट के खिलाफ आंदोलन होने लगा। लोग अपनी जमीन नहीं देना चाहते थे लोगों का नारा था – ''लोहा नहीं अनाज चाहिए, जीने का आधार चाहिए।''

''टाका पइसा अढ़ाई दिन, जमीन थाकले चिरो दिन''

मुझे भी विस्थापन अच्छा नहीं लगता क्योंकि गांव से उजड़ने के बाद लोगों की स्थिति बहुत ही दयनीय हो जाती थी। विस्थापन के खिलाफ आंदोलन करती रही परंतु आत्मनिर्भरता के कदम को भी रोका नहीं। बड़ा सिगदी में विद्यालय के सामने एक महुआ का पेड़ है उसी पेड़ के नीचे मैंने चना, मुढ़ी, टॉफी, बिस्कुट के दुकान की शुरूआत की। फिर धीरे-धीरे अपनी जमीन पर एक गुमटी लगाई। गुमटी में बच्चों की पढ़ाई की जरूरतों की सामान के साथ खाने-पीने के सामानों को भी रखना शुरू किया। बच्चों के साथ-साथ राहगीर भी गुमटी से सामान खरीदते। आमदनी इससे तो होने लगी पर मैं और आगे बढ़ना चाहती थी। संस्था में होने वाले कार्यक्रमों एवं आने वाले अतिथियों को भी खाना बनाकर खिलाने लगी। धीरे-धीरे मेरे पास पूंजी इकट्ठा हो गई। अभी उसी पूंजी की बदौलत मैंने घर में ही एक किराना की दुकान खोला है जिसमें गांव के लोगों की जरूरत की सामान को रखती हूं। लोग नगद ही सामान खरीदते हैं, पर कभी-कभी जरूरत पड़ने पर लोगों को उधार भी देती हूं। कभी-कभी दुकान को लोगों के जिम्मे देकर जंगल से पत्ते तोड़कर लाकर पत्तल बनाकर शादी-ब्याह, श्राद्ध भोज के समय उपलब्ध कराती हूं। इससे भी मुझे कुछ पैसे हो जाते हैं।

हां, मैंने आज भी सब्जी उगाने और बेचने का काम जारी रखा है। अब दो से तीन लोगों को मैंने सहयोग करने के लिए रखा है ताकि उनकी भी आजीविका चल सके। परिवार के बच्चों की पढ़ाई और परिवार के जरूरतों को पूरा करती हूं। ग्रामसभा की बैठक में नियमित जाती हूं। अन्य महिलाओं को भी नियमित भाग लेने के लिए प्रेरित करती हूं। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी मुझे काफी आकर्षित करते हैं। जब भी गांव में कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम होता है मैं उसमें अगुवाई करती हूं। आज मेरा संघर्ष रंग ला रहा है। आत्मनिर्भरता की राह पर मेरे कदम तो आगे बढ़ चुके हैं, आप बहनों के कदम भी सफलता और समृद्धि की ओर आगे बढ़े इसकी कामना है। ■

अजम एम्बा : आदिवासी 'स्लोफूड मूवमेंट' का एक भाग

अरूणा तिर्की

'अजम एम्बा' शब्द कुडुख भाषा से लिया गया है जो कि उरांव आदिवासी समुदाय द्वारा बोला जाता है। इस शब्द का अर्थ है 'अत्यंत स्वादिष्ट'। इस नाम का एक आदिवासी खान पान रेस्तरां एवं प्रशिक्षण केंद्र रांची में अवस्थित है। परन्तु 'अजम एम्बा' एक रेस्तरां भर नहीं है बल्कि एक मिशन है, जिसका उद्देश्य केवल स्वादिष्ट आदिवासी व्यंजन परोसना नहीं है, बल्कि इसके द्वारा लुप्त होते हुए आदिवासी परंपरा, संस्कृति एवं पहचान को मजबूत करना हैं। आदिवासी खान-पान न केवल स्वादिष्ट है बल्कि औषधीय एवं पौष्टिक तत्वों से भरपूर है। आज के युग में फ़ास्ट फ़ूड के व्यापक व्यवहार से लोगों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इस सन्दर्भ में 'अजम एम्बा' एक देशी/पारंपरिक खाद्य का विकल्प प्रदान करता है जो की आदिवासी खान-पान का आधार है। 'अजम एम्बा' का कार्य जलवायु परिवर्तन के कुप्रभावों से निपटने में एवं पर्यावरण सुरक्षा के सन्दर्भ में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि स्थानीय खाद्य व्यवस्थाओं का संवर्द्धन सतत् एवं निरंतर विकास (sustainable development) में मददगार है क्योंकि इन व्यवस्थाओं के द्वारा कार्बन उत्सर्जन नगण्य है (low or negligible carbon foot print), जैसे की परंपरागत फसलों की खेती या वनोपज का संग्रहण। यह पदार्थ आदिवासी खान पान का मूलाधार है।

मैं उरांव आदिवासी समुदाय से आती हूं। मेरा जन्म स्थान कांके हैं तथा पैत्रिक गाँव, नगड़ा, मांडर, राँची जिला में है। मैंने जेवियर समाज सेवा संस्थान, राँची से ग्रामीण विकास प्रबंधन की पढ़ाई की है। इस पढ़ाई के

पश्चात, आदिवासी समाज के बीच आजीविका, कम्युनिटी मोबिलाइजेशन, सामुदायिक स्वास्थ्य, जमीन पर अधिकार, विशेषकर वनाधिकार अधिनियम इत्यादि मुद्दों पर करीब 15 वर्ष से अधिक कार्य करने का अनुभव प्राप्त है। अपने पेशेवर कार्य के दौरान विभिन्न तरह के संगठनों के साथ मुझे काम करने का अनुभव प्राप्त है जिनमें कि UNDP जैसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं शामिल हैं। इसके अलावा मैं राष्ट्रीय आजीविका मिशन के तहत राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर भी रह चुकी हूं। अपने दीर्घ कालिक पेशेवर कार्य के दौरान मुझे यह महसूस हुआ कि आदिवासी समाज में पारंपरिक खाद्य जो की उनके संस्कृति एवं पहचान से जुडी हुई है, वह क्रमशः विलुप्त हो रहा है।

चूँकि मैं एक बड़े एवं संयुक्त परिवार से आती हूं जहाँ पारंपरिक खान-पान व्यवहार में था इसीलिए इसके गुणों के बारे में मुझे जानने का मौका मिला। अपने पेशेवर कार्य के दौरान, विशेषकर वनाधिकार अधिनियम पर कार्य करने में यह महसूस हुआ कि जमीन/वन पर अधिकार

के साथ-साथ उससे जुड़े हुए आजीविका का विकास भी महत्वपूर्ण है। इसके अलावा अपने कार्य के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों एवं हाट के अवलोकन के क्रम में यह पता चला कि गोंदली, मड़ुआ जैसे देशी खाद्य पदार्थो का प्रयोग ग्रामीण पशु आहार के रूप में कर रहे हैं। साथ ही आदिवासी लोगों में अपनी खाद्य परंपरा पर गर्व करने की भावना का ह्रास हो रहा है, विशेषकर युवा वर्ग में अपने खाद्य संस्कृति के प्रति अज्ञानता तथा रुझान में कमी काफी चिंतित और विचलित कर देने वाला अनुभव था। इन कारणों ने मुझे प्रेरित किया, आदिवासी खान-पान को जीवित रखने की एवं उसका संवर्धन करने की अपनी मुहीम की शुरुआत करने की।

अंतरराष्ट्रीय आदिवासी दिवस 2016 में कल्याण विभाग के द्वारा आदिवासी खाद्य प्रतियोगिता में मैंने अपनी उपस्थिति दर्ज कर प्रथम स्थान प्राप्त किया जो कि मेरे लिए उत्प्रेरक का काम किया। मैंने इस अवसर को रोजगार के साथ जोड़ने की संभावनाएं देखीं और महिला उद्यमिता पर कार्य करने का स्कोप देखा। शुरूआती दौर में विभिन्न संस्थाओं से जुड़कर मांग आधारित देशी खाद्यों का सेवा (service) दिया जिसमे सर्वप्रथम 'झारखंड ट्राइबल डेवलपमेंट' (JTDS) जैसी संस्था शामिल थी।

अजम एम्बा का उद्देश्य

- महिला उद्यमिता एवं स्वरोजगार का विकास।
- पारंपरिक किसानों एवं वन द्रव्य संग्रह करने वालों को अजम एम्बा के उत्पादन व्यवस्था से जोड़कर लाभ पहुंचाना।
- आदिवासी समाज में उनके खाद्य को लेकर जागरूकता फैलाना
- समाज को आदिवासी खान पान के रूप में स्वास्थ्यवर्धक खाद्य विकल्प देना।

सेन्टर फॉर वर्ल्ड सोलिडेरेटी' (CWS) स्वयंसेवी संस्था के द्वारा स्कूली बच्चों के लिए 'हेल्दी एण्ड सेफ फुड' अभियान में फ़ूड एक्सपर्ट के रूप में जुड़कर, दो वर्ष कार्य किया जिसमे राँची और जमशेदपुर के कुल 8 स्कूलों में विशेषकर मड़ुआ एवं गोंदली से बनाये गए खाद्य प्रस्तुत किये। इसके अलावा मैंने राँची स्थित विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं और सरकार द्वारा प्रायोजित

एक दिवसीय/पांच दिवसीय मेलों में भागीदारी सुनिश्चित किया था।

मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया फ्यूज़न फूड जैसे मड़ुआ मोमो एवं विविध प्रकार का पारंपरिक खाद्य लोगों द्वारा काफी पसंद किया गया। मेरे लिए यह प्रेरणादायक रहा और अगस्त 2018 में 'अजम एम्बा' आदिवासी खान पान रेस्तरां की स्थापना की जो कि कांके रोड (राँची) में स्थित है। यह झारखण्ड में पहला ऐसा पारंपरिक खाद्य रेस्तरां है जहाँ सारे खाद्य पारंपरिक तरीके से बनाये और परोसे भी जाते हैं। यह झारखण्ड का पहला ऐसा रेस्तरां भी हैं जहाँ सारे कर्मी आदिवासी और महिला हैं। यह आदिवासियों के द्वारा अपनी अस्मिता एवं पहचान को बनाये रखने के लिए एक सशक्त पहल है तथा आदिवासी दर्शन के द्वारा पृथ्वी के लिए एक सुरक्षित भविष्य का निर्माण करना इनके उद्देश्य में शामिल है।

वर्तमान में 'अजम एम्बा' में 15 महिला कर्मी है और पिछले दो वर्षों में स्थानीय स्तर पर करीब 10000 से अधिक लोगों को आदिवासी खान-पान को 'अजम एम्बा' द्वारा परोसा गया है।

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अजम एम्बा के द्वारा करीब 25000 से अधिक लोगों को झारखण्ड के आदिवासी खान पान से परिचित कराया गया। जापान में आयोजित स्लो फ़ूड महोत्सव में मैंने लगभग 200 से अधिक देशों से आये हुए प्रतिभागियों के सम्मुख झारखण्ड के आदिवासी खान-पान के महत्व के ऊपर अपना वक्तव्य रखा एवं लोगों से काफी सकारात्मक प्रतिक्रियाएं मिली। मैं 'झारखण्ड स्लो फूड' कम्युनिटी की संस्थापक हूं। स्लो फूड आन्दोलन एक अंतर्राष्ट्रीय प्रक्रिया है जिसका मुख्य उद्देश्य पारंपरिक खाद्य व्यवस्थाओं का सुरक्षित संवर्धन करना है तथा स्थानीय परम्पराओं, संस्कृति एवं आदिवासी पहचान को मजबूती प्रदान करना है।

मेरा आगामी 3–5 वर्ष में लक्ष्य है कि:

- झारखण्ड के आदिवासी खान-पान के प्रति लोगों में जागरूकता खासकर आदिवासी समाज में बढ़े और उसके द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता बढ़े।
- करीब 500 आदिवासी महिला/युवा को 'अजम एम्बा' के द्वारा प्रत्यक्ष रोजगार दिलाना।
- अप्रत्यक्ष रूप से करीब 5000 पारंपरिक किसान परिवार और वनोपज संग्रहण करने वालों को 'अजम एम्बा' के उत्पादन व्यवस्था से जोड़कर लाभ पहुँचाना।
- 'अजम एम्बा' की शाखाओं का स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्रसार कर अधिकाधिक रोजगार का सृजन करना।

मैं अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित हूं तथा अन्य महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रहती हूं। साथ ही उन्हें सहयोग करने हेतु भी तत्पर रहती हूं। 'अजम अम्बा' के माध्यम से इंडीनिजस खान-पान को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने हेतु मैं प्रतिबद्ध हूं। ■

कला मेरे जीवन में सर्वोपरि

डॉ. अंजु कुमारी साहु

मुझे कहा गया कि मैं अपने बारे में कुछ लिखूं। लेकिन मैं समझ नहीं पा रही कि आरंभ कहां से करूं। कला की बातों से ही शुरू करना ठीक होगा। कला मेरे जीवन में सर्वोपरि है। कला और जीवन का संबंध तो बड़ा घनिष्ट है। मेरा जीवन भी इससे अछूता नहीं।

बचपन से ही मेरा झुकाव चित्रकला की तरफ अधिक था। पढ़ना लिखना तो जैसे मुझे काटने को दौड़ता। खेलने में भी मन नहीं लगता। मुझे रंग बहुत अच्छे लगते मानो मुझे उनसे प्रीति सी हो गई थी। पुरानी चीजों को समेटना अच्छा लगता था। उनको जोड़ तोड़कर नई चीजें बनाना पसंद था। अपने नाम को सजा कर लिखना भाता था। रंगों को छुए बिना तो दिन ही नहीं गुजरता था। किसी भी तस्वीर को देखकर उसे बनाने की बेचैनी सी होने लगती। कुछ तो बन जाते कुछ नहीं बन पाते पर हार नहीं मानती।

मैं पांच बहनों में चौथे नंबर पर थी तो बहनों का साथ और प्रशंसा खूब मिली। यहां तक की पिताजी जब शाम को ऑफिस से घर लौटते तो मेरी चित्रकलाओं के लिए सुंदर फ्रेम खुद तैयार कर देते और दीवार पर सजा भी देते। इन्हीं बातों ने मुझे हमेशा प्रेरित किया।

मां गृहणी थी। मां को मैंने हमेशा देखा कि घर आंगन साफ सुथरा रखती। काम करती तो नागपुरी पारंपरिक गीतों को गुनगुनाती। जब झारखण्ड का पारंपरिक त्योहार करम, जीतिया, सोहराइ, देवठान आता तो खुद ही गोबर से पूरा आंगन लिपती फिर उसके ऊपर अरवा चावल की गुड़ी (अरवा चावल का आटा) से चौक पुरती। तीन धारियों से चौक पूरकर अल्पना बनाकर पूरा आंगन सुंदर बना देती। बड़े होते हुए मैंने मां से चौक पुरना (अल्पना बनाना) सीख लिया। मैं जब भी त्योहारों में चौक पुरती तो मां

कहती - ''तीनों धाइर कर बनाबे मइंञा'' (तीन धारियों में ही बनाना बेटी) मेरी जिज्ञासा जगी तो मैंने भी पूछ ही लिया - ''तीन धाइर मे काले बनेला मां?'' (तीन धारियों में ही क्यों बनता है मां?

मां ने बताया - ''तीन गो धाइर तीन देवतामन आहैं बन देवता, जल देवता, आइर भूईं देवता। शुभ काम में ऐहेमन के पहिले बोलाल जाएला। ऐहे मन कर आशीरबाद से जिनगी चलेला।'' (तीन धारी तीन देवताओं का प्रतीक है वन देव, जल देव और भू देव। शुभ काम में इन्हीं देवों का आह्वान किया जाता है। इन्हीं के आशीष से जीवन चलता है। चौक पुरने (अल्पना) में पेड़, पृथ्वी और पहाड़ों को प्रतीकात्मक रूप में बनाया जाता है। गांव के घरों की दीवारों पर बनने वाले चित्र भी मुझे बहुत आकर्षित करते थे। इन क्रिया कलापों ने मेरे चित्रकला के शौक को और बढ़ाया।

समय बीतता गया। पढ़ाई और भविष्य बनाना भी आवश्यक था। कुछ दिनों के लिए मुझे अपने शौक को भूलना भी पड़ा। जब तक पढ़ाई में मन नहीं लगा तो

नहीं लगा जब लगा तो झारखण्ड की प्रमुख क्षेत्रीय भाषा नागपुरी से पीएच.डी. कर लिया। मेरे शौक ने ही मुझे जुनूनी बनाया था। एक बार किसी काम को करने की ठान लेती तो करके ही दम लेती।

आज मैं रांची विश्वविद्यालय रांची के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में नागपुरी विभाग की सहायक प्राध्यापक हूं।

इसी बीच जिन्दगी के कई थपेड़ों ने हराने की कोशिश भी की लेकिन वो जिंदगी ही क्या जो संघर्षों के आगे घुटने टेक दे। मैंने हमेशा ऐसे समय में चित्रकला को अपने साथ पाया। जब परेशान होती कुछ बनाने बैठ जाती। यकीन मानिए तस्वीरें बनाते हुए सारी परेशानियां रंगों में कब धूल जाती थी पता ही नहीं चलता था। सब कहते देखो इसे परेशान होती है तो रंगों से खेलने लग जाती है।

कला सिर्फ आनन्द और उल्लास में ही प्रकट नहीं होती वरन् जीवन की समस्याओं पर नया प्रकाश भी डालती है। जीवन को जीने योग्य बनाकर उसे ऊंचा उठाती है। ऐसा कई बार हुआ है कि कलाओं ने कई लोगों को नई राह दिखाई है।

मुझे भी मेरी चित्रकला के शौक ने मेरे जीवन को नई दिशा दिखाई है। मां के सिखाए और हमारे सुंदर झारखंड की पारम्परिक कलाओं ने मुझे हमेशा प्रेरित किया और करते रहेंगे।

इन्हीं पारंपरिक कलाओं को मैंने कपड़ों पर बनाना शुरू किया। साड़ियां, दुपट्टे, टी-शर्ट, सजावट की सामग्रियों में पारंपरिक कलाओं का प्रयोग करना शुरू किया और रोजगार से जोड़ लिया।

इसमें मैंने सोशल मीडिया को माध्यम बनाया। मैंने फेसबुक से अपनी कलाओं को लोगों तक पहुंचाना शुरू किया। प्रतिक्रिया सकारात्मक मिली। फेसबुक के माध्यम से ही मुझे झारखंड सहित बिहार और बनारस से साड़ियों के आर्डर मिले। जिसे मैंने सफलतापूर्वक पूरा किया।

फिर मैंने अपना फेसबुक पेज 'झारदेहाती' बनाया, यह भी सहयोगी साबित हुआ, साथ ही इंस्टाग्राम पर आप मेरी कलाओं को 'Jhark-dehati' पर भी देख सकते हैं।

इस विषय पर मैं समय-समय पर झारखंड के अनुभवी व्यक्तियों से चर्चा करती रहती हूं। इन चर्चाओं से नए प्रयोग करने का मार्ग प्रशस्त होता है। मेरी कोशिश हमेशा रहती है कि मेरी कला में पारंपरिकता हमेशा झलकती रहे।

मेरे इस काम में मेरा परिवार, मेरे साथी और कला प्रेमियों का साथ हमेशा मिलता रहा है। इन सब में सोशल मीडिया ने भी अपनी अहम भूमिका निभाई है। भविष्य में भी सबका साथ और सहयोग मिलता रहेगा ऐसी आशा है। ■

सिरेमिक पॉटरी : शौक से व्यवसाय

अपर्णा चम्पिया

मेरा नाम अर्पणा चम्पिया है। भिलाई, छत्तीसगढ़ में मेरा बचपन गुजरा, मेरी पढ़ाई हुई और शादी के बाद मैं रांची आ गई। बचपन से ही मुझे फूलबगान का शौक रहा था जो अब तक जारी है। शादी के बाद जब मैं अपने पति के साथ धनबाद आयी, (चूँकि वे आईआईटी आईएसएम धनबाद में कार्यरत थे) वहाँ अपने इस शौक को और आगे बढ़ाई। मैंने यहाँ पर फूल-पौधों के प्रति एक उपयुक्त माहौल पाया। यहाँ के लोग बड़े ही उत्साह और आनंद के साथ फूल बागवानी नए नए तरीके के साथ करते दिखे। यहाँ सबसे अच्छी बात यह रही कि साल के शुरूआत में यहाँ फूल पौधे की प्रदर्शनी लगती रही थी जो मेरे लिए एक नया अनुभव रहा था। शुरू के कुछ सालों में मैंने सिर्फ अवलोकन ही किया, फिर उसके बाद इसमें भाग लेने का निर्णय लिया। जिसके लिए मैंने अपने क्वार्टर के आसपास के जगहों को फूल-पौधों के लिए तैयार किया, किस्म किस्म के पौधे जमा किये, जिसे जमीन और गमलों के अनुसार व्यवस्थित किया। अगले ही वर्ष से मैंने इसमें पूरे दिलचस्पी के साथ भाग लिया जहां मुझे पहली बार मेरी मेहनत और मेरी शौक का ईनाम मिला जिसने मेरे शौक को नया आयाम दिया। इस अभिमूल्यन ने फूल पौधों के प्रति न सिर्फ मेरी इच्छा को बढ़ाया बल्कि अब मैंने अपनी दिलचस्पी नए तरह के गमलों में दिखाई और मैंने सिरेमिक पॉट लेने के प्रति दिलचस्पी दिखाई। चूँकि लोकल मार्केट में इसकी उपलब्धता नहीं होने के कारण मुझे इसे ऑनलाइन खरीदना पड़ा। जो मुझे अपेक्षाकृत कुछ महंगा पड़ा। यही वजह रही कि मैंने इसके लिए कई एक माध्यम से खोज बीन शुरू की

और पाया कि यदि इसे थोक में लिया जाए तभी किफायती पड़ेगा। फिर मैंने सोचा कि इतना तो मेरी जरूरत से बहुत ज्यादा है क्यों न इसका व्यापार किया जाय। चूँकि बाज़ार में इसकी उपलब्धता कम और मांग ज्यादा होने कि वजह से व्यापारी मनचाहा मूल्य लगा देते हैं। ऑनलाइन में तो आज भी इसकी कीमत मुझे ज्यादा ही लगती है और जो लोकल दुकानों में मैं गयी हूँ उसकी गुणवत्ता भी कोई खास लगी नहीं।

तब मैंने यह निर्णय लिया कि मैं इसका व्यापार करूंगी और इसे उचित मूल्य पर बेचूंगी और तब तक मेरे पति का धनबाद से रांची स्थान्तरण हो चुका था जो की मेरे लिए एक तरह से अनुकूल स्थिति थी। यह बात मैंने अपने पति के समक्ष रखी और हमेशा की तरह इस बार भी उन्होंने मेरा साथ दिया। अब मेरा मन बहुत उत्साहित था और हमने यह निर्णय लिया कि हम धीरे से थोड़े से ही पूंजी से इसकी शुरुआत करेंगे और व्यापार करने के सारे दरवाजे खुले रखेंगे जैसे ऑनलाइन के द्वारा जिसमें अमेज़न, फ्लिपकार्ट आदि शामिल हैं; फ़ोनकॉल पर, व्हाट्सएप पर या सीधे संपर्क करके भी।

और एक खास बात इस व्यवसाय को आगे बढ़ाने में रोशन आइंद जो फेसबुक में ट्राइबकार्ट के एडमिन हैं, का बहुत बड़ा योगदान रहा है। जिन्होंने हमें इसके माध्यम से व्यापार करने का न सिर्फ रास्ता बताया बल्कि काफी सहयोग भी किया। और आज कई सारे लोग हमारे संपर्क में हैं और इसके माध्यम से हमसे सिरेमिक पॉट्स खरीद रहे हैं। फ़िलहाल इस व्यवसाय को हम अपने घर से ही संचालित कर रहे हैं जब तक की हमारे अनुसार कोई दुकान न मिल जाय। भविष्य में हमारी योजना इसे अलग और ऊँचे स्तर तक ले जाने का है, हम इस व्यवसाय से संबंधित अन्य व्यवसाय को भी जोड़ना चाहते हैं जैसे डेकोरेटेड मिट्टी के बरतन, नर्सरी, कूरियर, क्रॉकरी आदि का व्यवसाय। ताकि हमारे झारखंड के कई बेरोजगार युवक युवतियों को रोजगार का अवसर प्रदान दिया जा सके।

यह थी मेरे शौक का व्यवसाय में रूपांतरण की एक छोटी सी कहानी। ■

कारवां बढ़ता रहे

तारा देवी

हजारीबाग जिले का एक गांव है - फुरका, जो ईचाक प्रखंड में पड़ता है। मैं तारा देवी इसी गांव की महिला हूं। शुरू में मेरी स्थिति बहुत ही दयनीय थी। मेरे पति ने दो शादी की थी। वह मुझ पर बहुत अत्याचार करता था। मारपीट तो करता ही था मुझे ठीक से खाना भी नहीं देता था न पहनने को कपड़े। मेरे दो बच्चे हैं उन्हें भी उनका अधिकार नहीं मिल पाता था। भोजन, शिक्षा से वे भी वंचित थे। मुझे केवल बाहर का काम करना होता था जैसे जंगल से लकड़ी लाना इत्यादि। इससे परेशान होकर मैं गांव के माननीय व्यक्तियों को बुलाकर पंचायत बैठाती। ऐसा मैंने कई बार किया। पंचायत के दबाव के कारण मेरे पति ने बच्चों का नामांकन सरकारी स्कूल में करा दिया, पर मेरा कष्ट दूर न हुआ। मेरी घर की आर्थिक स्थिति दिन-ब-दिन खराब होने लगी। पति का काम था केवल सुबह से शाम इधर-उधर घूमना एवं रात में मेरे ऊपर अत्याचार करना। इन सबसे मैं आजिज आ गई थी पर क्या करती मेरे पास अपनी बदहाली पर रोने के सिवा कुछ न था। वर्ष 2019 का मार्च महीना मेरे लिए एक यादगार महीना है। सृजन फांउडेशन के द्वारा फुरका गांव में मंदिर महिला मंडल की बैठक की गयी। उस बैठक में मेरे बारे में चर्चा की गई। लोगों ने महसूस किया कि

अगर तारा देवी को कुछ काम मिल जाय तो उसकी स्थिति में कुछ सुधार आ सकता है। पर मैं उस समय उस समूह की सदस्य भी नहीं थी। सृजन फाउंडेशन की पहल से मुझे मंदिर महिला मंडल का सदस्य बनाया गया और समूह ने मुझे पशु सखी के रूप में चयन किया। पशु सखी के चयन के पश्चात मुझे सात दिन का प्रशिक्षण पशुओं की देख-रेख के संबंध में दिया गया। मैं जब प्रशिक्षण लेकर लौटी तो लगा कि मैं अलग ही तारा देवी हूं। मेरे में आत्मविश्वास आ गया कि मैं भी कुछ कर सकती हूं। अब मेरे जीवन में एक नया मोड़ आया और मुझे लगने लगा कि मेरे दुखों के बादल अब छंटने वाले हैं। मैंने अपने घर में 2 मुर्गी खरीदी एवं मुर्गी पालन शुरू किया साथ ही गांव में ही मुर्गी एवं बकरी जैसे पशुओं का टीकाकरण भी करने लगी। इससे मुझे आमदनी भी होने लगी। एक साल के अंदर ही मेरे द्वारा पालने वाली मुर्गियों की संख्या बढ़कर करीब 200 हो गई। मैंने अंडा एवं मुर्गा-मुर्गियों को बाहर बेचना शुरू किया। साथ ही इसे व्यवसाय का रूप देने के लिए मुर्गी पालन के लिए बड़ा पॉलिट्री शेड (Poultry shed) भी बनवा लिया।

अभी मैं दो तरह का मुर्गी पालन करती हूं। वर्तमान में मेरे पास 300 देशी मुर्गी है। मैं प्रतिमाह लगभग 4000

रुपये का अंडे बेचती हूं तथा चूजा तैयार कर भी बेचती हूं जिससे मुझे 22000-28000 रुपये तक की आमदनी हो जाती है। घर के खर्चे के अलावा महीने 2500 रुपये का कमिटी भी खेलती हूं तथा सालाना 18000 तक बचत भी करती हूं। अंडा एवं चूजा बेचने के लिए मुझे बाहर भी नहीं जाना पड़ता। हर माह व्यापारी उसे घर से ही ले जाता है। आज पूरा गांव मेरी तारीफ करता है। महिलायें जब आर्थिक रूप से स्वावलंबी होती है तो समाज एवं परिवार में उसका रूतबा बढ़ता है एवं लोग आपको साथ देते हैं। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। अभी मेरे पति कृषि से लेकर मुर्गी पालन तक में मेरी मदद करते हैं। मेरी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ। वर्तमान में मैं मुर्गी पालन के साथ-साथ जैविक खेती भी कर रही हूं। समय-समय पर खेती पर प्रशिक्षण लेकर नयी-नयी तकनीक को जान कर आती हूं एवं उसे अपनाती भी हूं ताकि उपज में बढ़ोत्तरी हो सके। ग्राम सभा की बैठकों में नियमित रूप से भाग लेती हूं ताकि सरकारी योजनाओं की जानकारी भी मिल सके। अन्य महिलाओं को भी आर्थिक स्वावलंबन हेतु आगे बढ़ने के लिए जागरूक करती हूं। मुझे लगता है जैसे लोगों ने मुझे आगे बढ़ने में सहायता की, मैं भी लोगों को करूं ताकि यह कारवां बढ़ता रहे। ■

ऋण लेकर प्रारंभ किया परचून की दुकान

सशक्तीकरण का उदाहरण पेश करने वाली एक और महिला हैं सविता देवी। इनके चेहरे पर मुस्कान और आत्मविश्वास साफ झलकता है। सविता मनोहरपुर प्रखंड के नंदपुर गांव के जिलीनगुटू टोला की निवासी हैं। इस टोले की साधारण सी दिखने वाली यह महिला सही अर्थों में एक सफल उद्यमी हैं। उद्यमी बनने का सिलसिला वर्ष 2003 से प्रारंभ हुआ जब वो मंशा स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। वह बताती हैं कि निवेश के लिए उनके पास पूंजी नहीं थी। सविता ने समूह के रिवॉल्विंग और ग्राम संगठन के सीआइएफ फंड से पैसा बतौर ऋण लिया। सविता बात करने के दौरान एक क्षण के लिए भावुक हो जाती हैं। उनकी आखों में आंसू के कुछ बूंद अनायास टपक पड़ते हैं। वह बताती हैं कि समूह से लिए पैसों से उन्होंने सबसे पहले कपड़ा धोने और स्नान करने के लिए साबुन खरीदा था। वह पुराने दिनों को याद करते हुए बताती हैं कि घर में खाने के लिए सिर्फ अनाज हुआ करता था और पैसों की भारी किल्लत रहती थी। कभी पैसों की जरूरत पड़ी तो पास-पड़ोस से मांगने पर पैसा तो नहीं मिलता उलटा बात सुनने को जरूर मिलता था। थोड़ी सी जो जमीन है उसी में पति खेती-बाड़ी करते हैं और उसी से जीवन यापन चल रहा था। लेकिन समूह से जुड़ने के बाद बहुत बदलाव आया है। ऋण के रूप में लिए पैसों से एक छोटी रोजमर्रा की जरूरतों की सामान के लिए एक दुकान खोली। आज यह दुकान अच्छी चल रही है। सविता को उम्मीद है कि उसके बच्चे भी अच्छी पढ़ाई कर सकेंगे। ■

साभार : **पंचायतनामा**

राशन दुकान ने बदली किस्मत

रीना देवी

हजारीबाग जिले के ईचाक प्रखंड का एक गांव है शायलकला। इस गांव की निवासी मैं रीना देवी हूं। मैं अपने तीन बच्चों एवं पति के साथ गांव में ही रहती हूं। आजीविका का एक मात्र श्रोत मजदूरी से प्राप्त आय है। पति पहले मजदूरी करते थे जिससे गुजारा किसी तरह हो जाता था। परंतु इधर कुछ दिनों से मेरे पति हमेशा बीमार रहते हैं जिस कारण काम नहीं कर पाते हैं और जब कोई मजदूर काम ही नहीं कर पायेगा तो उसे मजदूरी भी कैसे मिलेगी। परिवार की आय जब घटती है तब उसका असर खान पान रहन सहन में तो पड़ता ही है। शिक्षा में भी पड़ता है। मेरे परिवार के साथ भी ऐसा ही हुआ। मेरे घर की माली हालत भी दिन-ब-दिन दयनीय होती चली गई। फिर मैं सृजन फाउंडेशन के संपर्क में आई। सृजन फाउंडेशन और ग्राम संगठन की मदद से मैंने पति के साथ मिलकर खेती के लिए जैविक खाद, जैविक कीटनाशक एवं जैविक दवा की दुकान खोली। दुकान चल निकली। जब दुकान चलने लगी तब उसमें जैविक दवा खाद इत्यादि के साथ राशन (खाने-पीने का सामान) भी रखने लगी। राशन की सामग्री रखने के साथ ही दुकान अच्छे से चलने लगी। मैं अब स्वयं दुकान पर बैठती हूं। सामग्री की ज्यादा बिक्री होने से फायदा भी होने लगा। कुछ महीने बाद दुकान के फायदे से ही मैंने दुकान में लोगों की जरूरतों के सामानों को ज्यादा रखने लगी। जब लोगों को एक जगह अपनी जरूरत का सामान मिलने लगता है तब लोग उसी दुकान से ही सारा सामान लेने लगते हैं। मेरा व्यवहार भी लोगों के साथ अच्छा था जिस कारण भी लोग मेरे दुकान से सामान लेना ज्यादा पसंद करने लगे। दुकान बेहतर चलने से मेरी आय में भी वृद्धि हुई। पहले जहां 75-100 रु. का फायदा होता था वह बढ़कर 200-300 रु. होने लगा। अब मेरे परिवार में खुशियां लौट आयी है। कृषि एवं दुकान की आय से मेरी आजीविका में सुधार आया। बच्चों को भी बेहतर शिक्षा दिला रही हूं। लॉकडाउन के समय जब लोग आर्थिक तंगी से गुजर रहे थे मैंने अपने दुकान की बदौलत घर को अच्छे से चलाई। मेरे हौसले बुलंद है। मुझे लगता है अगर मन में इच्छा शक्ति और दृढ़ विश्वास हो तो आपको आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता है। मैं सृजन फांउडेशन और ग्राम संगठन को भी उनके सहयोग और मार्ग दर्शन के लिए धन्यवाद देती हूं। वर्तमान में अन्य महिलाओं को भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हूं ताकि किसी को भी किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े। ■

अपनी राह तलाशती महिलाएं

कोर्दूला कुजूर

एक समय था जब महिलाएं घर की चार दिवारी के अन्दर ही रहना ज्यादा पसन्द करती थीं। महिलाएं अपने को मां और बहू के रूप में ही देखना चाहती थी। उनका पूरा समय घर के कामों में ही बीतता था। किसी काम के लिए कहने पर उनका एक ही जवाब होता था-घर के कामों से फुर्सत मिले तब तो। हां उन्हें बाजार हाट-हाट और मेला घूमना भी अच्छा लगता था और इसके लिए वे कहीं से थोड़ा बहुत पैसा इक्ट्ठा कर लेती थीं, लेकिन समय के साथ धीरे-धीरे सब कुछ बदला। आज उनके अन्दर खुद के पैरों में खड़ा होने का जुनून देखा जा सकता है। चाहे वह शहरी महिलाएं हों अथवा ग्रामीण महिलाएं। अपनी राह तलाशती हुई महिलाएं आज घर के चार दिवारी को लांघ चुकी हैं। आज हमारी महिलाएं सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं में अपनी जगह बना चुकी हैं। खेल, सरकारी सेवा, देश सेवा एवं अन्य क्षेत्रों में कई महिलाओं ने अपना लोहा मनवा लिया है। वैसे ही कुछ महिलाएं एवं बेटियां ऐसी हैं जिन्हें बॉस के नीचे काम करना अच्छा नहीं लगा, कोई अपने पति को घर चलाने में मदद करना चाहती थी, या किसी के साथ कोई अन्य मजबूरी थी, इन सबों ने अपने स्तर से खुद का व्यवसाय करने की बात सोची तथा कुछ महिलायें कम पूंजी में ही अपना व्यवसाय शुरू कर आत्म निर्भरता की ओर अपने कदम को आगे बढ़ा रही हैं।

विश्वव्यापी कोविड-19 के कारण कई लोगों के रोजगार छिन जाने से सैकड़ों महिलाएं सब्जी और फल बेचना शुरू की हैं। कईयों ने चाय-पकौड़े की दुकान भी शुरू की है और इससे पैसा कमाकर इस विकट समय में अपने परिवार का संचालन कर रही हैं।

इसके अलावा महिलाएं कृत्रिम फूल, मशरूम उत्पादन, मोमबत्ती बनाने और सिलाई-कढ़ाई का काम भी कर रही हैं। कई ने बकरी पालन, बत्तख/मुर्गी पालन का काम भी शुरू किया है। प्रोफेशनल महिलाओं में से कुछ ने कपड़ा, ज्वेलरी और रेस्टोरेन्ट जैसा काम भी शुरू किया है। हमारे टोले-मुहल्ले और समूहों में भी कई महिलाएं हैं जो अलग-अलग तरह का काम कर रही हैं।

जीरा जलही उरांव, सुकरमनी उरांव, पालहो उरांव, करमी उरांव तथा दशमी के अलावा कई महिलाएं सब्जी का व्यवसाय कर रही हैं।

जीरा जलही उरांव की उम्र लगभग 56 साल है। परिवार में पांच सदस्य हैं। अपने जवान बेटे की आकस्मिक मृत्यु के बाद वह बिल्कुल टूट सी गई थी, क्योंकि वह परिवार का एकलौता कमाऊ बेटा था। अब उनके सामने परिवार के अन्य पांच सदस्यों को पालने-पोसने का जिम्मा था। ऐसे समय में उन्होंने सब्जी बेचने का निर्णय लिया। वह अपने घर के सामने ही सब्जी की दुकान लगाने लगी। इस काम में उसे अपनी बेटी और बुजूर्ग पति का भी साथ मिला। उन्होंने सब्जी बेचकर अपनी बेटी और एक बेटा को ग्रेजुवेशन तक की पढ़ाई करायी। दो साल पहले उन्होंने अपनी बेटी की शादी भी बड़ी धूमधाम से की। आज उसकी बेटी और दामाद दोनों निजी कम्पनी में नौकरी कर रहे हैं। सुकरमनी, पालहो दशमी और करमी का भी लगभग यही कहानी है। ये महिलाएं भी सब्जी बेचकर अपने परिवार का भरण-पोषण कर रही हैं। करमी उरांव की उम्र लगभग 45 वर्ष है। जब वह शादी करके आयी तब उसका परिवार बहुत बड़ा और भरा पूरा था लेकिन सास ससुर की मृत्यु के बाद सभी अलग-अलग रहने लगे, उसके पति का नौकरी नहीं था। ऐसे समय में उसका परिवार भी आर्थिक रूप से डगमगाने लगा।

करमी ने सब्जी का बिजनेस करने की सोची और उन्होंने पूंजी इक्ट्ठा कर बिजनेस शुरू किया। करमी का कोई संतान नहीं है, ऐसे में कई बार उन्हें ताने भी सुनने पड़ते थे,लेकिन इन्होंने इसकी परवाह किए बिना आगे बढ़ने की सोची। आज पति के सहयोग से करमी अपने बिजनेस में काफी अच्छा कर रही है।

काजल लहरी ने चाय-पकौड़े का दुकान शुरू किया हैं।

जहाना खातुन, रीना खलखो और कैथरीना तिर्की बकरी पालन और, बत्तख/मुर्गी पालन का काम कर रही हैं।

जहाना, रीना और कैथरीना की उम्र क्रमशः 45, 40 और 47 वर्ष है। इन्होंने घर के काम को करते हुए यह बिजनेस शुरू किया है। रीना का यह बिजनेस शौकिया है लेकिन जहाना और कैथरीना के पति नहीं रहने के कारण उन्हें परिवार चलाने और बच्चों की अच्छी पढ़ाई के लिए यह बिजनेस करना पड़ रहा है।

रिजवाना खातुन की उम्र 50 वर्ष है। इन्होंने अपने पति को साथ देने के लिए सिलाई का काम शुरू किया है। क्योंकि एक व्यक्ति के कमाई से परिवार चलाना मुश्किल हो रहा था।

राखी देवी की उम्र लगभग 36 वर्ष है। इनके पति ओला चलाते हैं। परिवार की गाड़ी अच्छा चले, बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले इसलिए ये अपना स्टेशनरी की दुकान चलाकर परिवार चलाने में पति को मदद करती हैं।

संगीता बेक का शौकिया बिजनेस है। इनके पति सी.सी.एल अस्पताल में कार्यरत हैं। अपना खाली समय में ये ज्वेलरी और कपड़े का ऑन-लाईन बिजनेस करती हैं।

उषा मिंज की उम्र 40 वर्ष है। पिछले चार वर्षों से ये कृत्रिम फूल-माला का व्यवसाय कर रही हैं, पिछले एक वर्ष से वह मशरूम का व्यवसाय भी शुरू की हैं। इन्होंने अपने जीवन में काफी संघर्ष किया है। पिताजी की मृत्यु के बाद बड़े भैया इन्हें और छोटी बहन को अपने साथ रांची ले आये। इनकी पढ़ाई यहीं से पूरी हुई और शादी भी रांची में ही हुई। इनका घर भरा पूरा था, पति की भी अच्छी नौकरी है। ये भी नौकरी करना चाहती थी लेकिन परिवार वालों को यह मंजूर नहीं था, इसलिए इन्होंने घर में रहकर ही कुछ बिजनेस करने का मन बनाया। फूल-माला का व्यवसाय इसे अच्छा लगा और इस काम को इन्होंने चोरी छिपे शुरू किया। इन्हें बाहर निकलने की भी इजाजत नहीं होती थी फिर भी अपनी जिद् से इस काम को इन्होंने शुरू किया। आज इस काम के लिए उन्होंने वर्त्तमान में 45 महिलाओं

को रोजगार से जोड़ा है। शहर के कई छोटे-बड़े प्रतिष्ठानों में इनके सामान उपलब्ध हैं। इन्होंने एक और बड़ा काम किया है, कि डेन्ड्राइट जैसे अन्य नशा करने वाले बच्चों को उनके माता-पिता के आग्रह पर अपने काम से जोड़कर उन्हें नशा मुक्त किया है। अब बच्चे अच्छी तरह से पढ़ने-लिखने लगे हैं। इससे बच्चों के अभिभावक और बच्चे दोनों खुश है।

मनीषा मिंज और स्वीटी केरकेट्टा ने फैशन-डिजाइनिंग का व्यवसाय पिछले एक वर्ष से शुरू कर कई लोगों को रोजगार से जोड़ा है।

मनीषा मिंज, 'ऐम एण्ड ऐम' फैशन नाम का महिलाओं के कपड़ों का स्टोर चलाती हैं। इन्होंने रेडियो का नौकरी छोड़कर इस काम को शुरू किया है।

इनका कहना है कि मैं बिजनेस में बहुत नयी हूं लेकिन हमेशा से कहीं न कहीं बिजनेस करने की इच्छा मन में रखती थी और इसी ने मुझे यहां तक खींच लाया है। मनीषा मिंज मास कम्युनिकेशन बैकग्राउंड से आती हैं। रांची के संत जेवियर कॉलेज से स्नातक करने के बाद दिल्ली के IIMC कॉलेज से 'एडवरटिजमेंट एण्ड पब्लिक रिलेशन' की पढ़ाई की। तत्पश्चात दिल्ली के ऑल इंडिया रेडियो के मीडिया सेल में काम किया। कुछ समय के लिए दूसरे मीडिया हाउस में भी काम किया लेकिन वहां मन नहीं लगने के कारण वहां की नौकरी भी छोड़ दी। बाद में उन्हें लगा कि बिजनेस करना चाहिए वही मन लेकर मार्च 2020 में लड़कियों/महिलाओं के लिए फैशन का स्टोर खोली। उसी समय कोरोना के चलते अपना स्टोर 3 महीने के लिए बंद करना पड़ा और उसका काफी प्रभाव बिजनेस पर पड़ा। लेकिन जब सरकार ने कपड़ा दुकान खोलने की अनुमति दी, तब से स्टोर अच्छा चल रहा है। मनीषा का कहना है कि मेरा स्टोर पूरी तरह से महिलाओं, खास कर आदिवासी महिलाओं को समर्पित है। मेरी मां के सपोर्ट के बिना दुकान का सपना देखना मुश्किल था। उन्होंने हर कदम में मेरा साथ दिया है। इन्होंने अपनी दुकान में जो भी स्टाफ रखा है वो सभी आदिवासी लड़कियां हैं। इनका कहना है कि अपने साथ और भी आदिवासी महिलाओं

को जोड़ सकूं और उन्हें आत्मनिर्भर बना सकूं, यह मेरी दिली तमन्ना है।

इस तरह से देखें तो महिलाएं धीरे-धीरे आत्म निर्भरता की ओर आगे बढ़ रही हैं। यदि परिवार का साथ और सरकार से सहयोग मिले तो हमारी महिलाएं, व्यवसाय में भी अपना परचम लहरा सकती हैं। ■

समूह से मिला कठिन घड़ी में साथ और खुद का रोजगार

रांची जिला के अनगड़ा प्रखंड का एक गांव है बहेया। यहीं की एक महिला है सिसेलिया गाड़ी। सिसेलिया के जीवन में एक कठिन मोड़ तब आया जब विवाह के एक वर्ष बाद ही उनके पति की मृत्यु हो गयी। यह समय उनके लिये सबसे तकलीफ भरा था। सिसेलिया बताती हैं कि मैट्रिक पास करने के बाद ही उनकी शादी कर दी गयी थी। ससुराल गई तो पता चला कि परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। पति अपनी पढ़ाई के साथ साथ जीविका के लिए एक छोटी दुकान चलाते थे। पैसे की कमी होने के कारण बड़े दुकान से भी कभी-कभी उधारी सामान लाना पड़ता था। शादी के एक साल बाद पति को चोट लगने और पैसे के अभाव में सही इलाज न करा पाने के कारण मृत्यु हो गयी। पति की मृत्यु के बाद ससुराल वालों ने भी साथ नहीं दिया। खाने और रहने की हमेशा दिक्कत होने लगी थी। साथ में एक बच्चा भी था। इस बीच वह अपने नैहर नामकुम चली गयीं। वह कहती हैं कि कुछ समय के लिये तो मेरा सब घर उजड़ गया था लेकिन फिर मैंने फैसला किया मैं अपने ससुराल जाऊंगी और वहीं अपने बच्चे को किसी स्कूल में नामांकन करा दूंगी। नैहर रहने के दौरान मैंने अपनी रोजी रोटी के लिए सिलाई का प्रशिक्षण लिया था जिसका ससुराल में रहकर उपयोग कर रही थीं। सिसेलिया बताती हैं कि इसी बीच आजीविका मिशन के तहत चलने वाली स्वयं सहायता समूह का पता चला। समूह की दीदी लोग ने समूह से जुड़ने के लिए प्रेरित किया और बताया कि समूह सभी प्रकार की समस्या का समाधान करने में मदद करेगा। समूह से जुड़ जाने से मुझे एक नया विश्वास मिला और खुद को ससुराल में टिका सकी। आजीविका के लिए स्वयं सहायता समूह के माध्यम से मैंने ऋण लिया और अपना रोजगार करना प्रारंभ किया। सिलाई के साथ मुर्गी पालन भी किया। अपने बेटा को आइटीआइ में दाखिला दिलाया। अब धान कूटने की मशीन लगाने की योजना है और लाह की खेती को बढ़ाना है। वह कहती है कि आजीविका मिशन की स्वयं सहायता समूह के कारण ही वह आज स्वरोजगार अर्जित करने में सक्षम हो सकी हैं। ■

साभार : **पंचायतनामा**

ज्योति के आइडिया से समूह को मिलती है व्यापार की समझ

शिकोह अलबदर

उनके चेहरे पर मुस्कान है, आंखों में चमक है। कुछ नया कर गुजरने की चाहत साफ झलकती है। उन्होंने किसी उच्च संस्थान से ना तो एमबीए की डिग्री ली है और ना ही किसी कंपनी में मैनेजर है लेकिन जब वो मार्केटिंग, फाईनान्स, एडवरटाइजिंग, ऑपरेशन, रिस्क मैनेजमेंट आदि पर चर्चा करते हुए व्यापार करने के तौर-तरीकों पर बात करती हैं और इसके सभी पहलुओं पर अपनी समझ जाहिर करती है तो आप आश्चर्यचकित हो जायेंगे। यूं तो वह रामलखन कॉलेज से क्षेत्रीय भाषा नागपुरी में स्नातक की हैं लेकिन उनमें एक बेहतरीन मैनेजर और मार्केटिंग कंसल्टेंट के गुण लबरेज हैं। जी हां, यह हैं रांची जिला के अनगड़ा प्रखंड के गेतलसूद की ज्योति। ज्योति महिला सशक्तिकरण का एक बेहतरीन उदाहरण पेश करती हैं।

महिलाओं को संगठित कर बनाया समूह

ज्योति वर्तमान में झारखंड राज्य आजीविका प्रमोशन सोसाइटी से जुड़ कर माइक्रो इंटरप्राइज कंसल्टेंट के रूप में काम कर रही हैं। बातचीत के दौरान वह बताती हैं कि मास्टर एम.इ.सी. बनने तक के सफर की शुरुआत आजीविका के माध्यम से महिला समूह बनाने से हुई थी। वर्ष 2013 में उन्होंने महिलाओं को संगठित कर समूह चलाने की बात रखी और महिलाओं को समूह से जुड़ कर बचत कर अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रारंभ में तो महिलाओं ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी लेकिन धीरे-धीरे महिलाओं को लगा कि यह संभवतः उनके लिए कारगर सिद्ध हो। इस तरह से ज्योति महिला समिति का गठन किया गया। समूह की महिलाओं ने ज्योति को पढ़ी-लिखी होने के कारण पुस्तक संचालन का काम सौंपा। ज्योति बताती हैं कि पहले बचत कैसे करेंगे इस पर जानकारी दी गयी और किस प्रकार बचत के पैसों का जरूरत के समय में इस्तेमाल किया जा सकेगा। सभी

महिलाओं ने बैठक कर यह निधारित किया कि सप्ताह में प्रत्येक मंगलवार को एक घंटे का बैठक किया जायेगा और समूह के कामकाज पर चर्चा की जायेगी। इस पर सभी राजी हो गये। ज्योति कहती हैं : सभी महिलाएं चाहती थी कि बचत करें लेकिन यह बचत कैसे और कहां किया जाये इसके बारे में उन्हें कोई जानकारी पहले नहीं थी। लेकिन समूह बनने के बाद प्रत्येक महिला को लगा कि समूह में बचत करना लाभदायक है। कारण कि जब चाहे पैसा निकाल सकते हैं। महिलाओं ने पहले 10 रुपया बचत करना प्रारंभ किया लेकिन बाद में सभी ने 20 रुपया बचत करना शुरू किया। समूह की बचत और वित्तीय सहायता से समूह की महिलाओं ने लाभ उठाया। ज्योति बताती हैं कि समूह के पैसे से ही एक महिला का इलाज कर जान बचाया जा सका। समूह से महिलाओं को काफी मदद मिली। इस गांव की अधिकांश महिलाएं मछली व्यापार कर अपनी जीविका अर्जित कर रही हैं।

गांव के पास ही डैम है जहां से मछली लायी जाती है। ज्योति कहती हैं – गेतलसूद डैम यहां की महिलाओं के लिए रोजगार का बड़ा साधन है। इस गांव में अधिकांश महिलाएं मछली विक्रेता हैं। समूह की महिलाओं ने अधिक मछली की खरीद के लिए समूह से पैसे लिये। महिलाओं ने मछली व्यापार के साथ-साथ नाव बनाने के लिए भी पैसा लिये। ज्योति से यह सवाल किये जाने पर कि समूह से उन्हें व्यक्तिगत क्या लाभ मिला है? वह हंसती हैं और कहती हैं : सिलाई मशीन खरीदा है। कपड़ा सिलाई का काम करती हैं। इससे उन्हें अच्छी आय अर्जित करने में मदद मिल रही है। सिलाई-कढ़ाई सीखे होने के कारण ज्योति गांव की बच्चियों को सिलाई का प्रशिक्षण भी दे रही हैं।

ज्योति से झारखंड राज्य आजीविका प्रमोशन सोसाइटी की ओर से माइक्रो इंटरप्राइज कंसल्टेंट का प्रशिक्षण प्राप्त करने के अनुभवों के विषय पूछे जाने पर उनमें आत्मविश्वास का संचार और अधिक हो जाता है। गांवों में समूहों को बिजनेस प्लान देने की जिम्मेदारी उन्हें ही सौंपी गयी है। ज्योति समूह की महिलाओं को यह बता पाने में सक्षम है कि किस कारोबार के लिए कितना पैसा लगाना होगा, बाजार कहां खोजना होगा, वित्तीय सहायता कैसे और कहां मिलेगी। व्यापार की सभी जरूरी पहलुओं की जानकारी ज्योति समूह की महिलाओं को दे रही हैं। अब ज्योति को आशा है कि वह समूह की महिलाओं को बिजनेस प्लान देकर और उसे प्रभावी तरीके से अमल में लाकर सदस्यों की और अधिक मदद कर सकेंगी। वह कहती हैं कि अब समूह को व्यापार करने की अधिक जानकारी हो सकेगी। पहले तो व्यापार के विषय में कुछ नहीं जानते थे। ज्योति बताती हैं कि एम.इ.सी. के चयन के लिए आठ चरणों में नॉलेज एंड एक्टिविटी बेस्ड परीक्षा ली गयी थी। इसमें पचहत्तर उम्मीदवारों का चयन हुआ था। एक परीक्षा और आयोजित की गयी थी जिसमें पैंतीस मास्टर एम.इ.सी. का चयन हुआ और वह भी उनमें से एक थीं। मास्टर एम.इ.सी. में चयन और केरल यात्रा उनकी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। आज ज्योति जूनियर एम.इ.सी. को प्रशिक्षण देने का काम भी कर रही हैं। ज्योति मास्टर एम.इ.सी. के रूप में सक्रिय भूमिका निभाते हुए समूह की महिलाओं को अच्छे बिजनेस प्लान देने की योजना रखती है। सूअर तथा बकरीपालन, मछली व्यापार, सब्जी उगाने वाली महिला किसानों के लिए उन्होंने योजनाएं बनायी हैं। उन्हें खुशी है कि अब उनकी एक नयी सामाजिक पहचान है

और एक नयी भूमिका के साथ वह तमाम जिम्मेदारियों के निर्वाह के लिए तत्पर नजर आती हैं।

केरल यात्रा का अनुभव कारगर

माइक्रो इंटरप्राइज कंसल्टेंट के प्रशिक्षण के बाद एक्सपोजर विजिट के लिए केरल भ्रमण के लिए चयनित किया जाना ज्योति के लिए सबसे सुखद क्षण था। ज्योति बताती हैं कि केरल में महिला समूह विभिन्न तरह के उद्योग कर अच्छी आय अर्जित कर रही हैं। प्रिंटिंग प्रेस, कृषि, काजू उत्पादन, रेडिमेड कपड़ों की दुकानें आदि महिला समूह चला रही हैं। ज्योति की इच्छा है कि झारखंड में भी महिलाएं इसी तरह काम करें। उनकी नजर में महिलाओं के लिए यहां भी कई लघु उद्योग स्थापित करने के अवसर है। वह कहती हैं : सरसों और करंज का तेल निकाला जा सकता है, राज्य में कटहल और इमली का उत्पादन अधिक है, इसका निर्यात दूसरे राज्य में किया जा सकता है। महिलाएं समूह बनाकर सब्जी और मशरूम उत्पादन कर इसका निर्यात कर सकती हैं। महिलाओं की सोच को बदलना होगा और उन्हें अधिक संगठित करने की जरूरत है। ज्योति भविष्य में अपना निजी कारोबार करना चाहती हैं। वह सिलाई-कढ़ाई के साथ ब्यूटीशियन का काम भी जानती हैं। इसके लिए उन्होंने स्वयं के लिए भी एम.इ.सी. प्लान बनाया है। वह कहती हैं कि अब स्वयं मार्केट बनाना जान गये हैं, इससे कारोबार बढ़ाने में आसानी होगी और एम.इ.सी. के रूप में दूसरों को व्यवसाय के संबंध में सलाह देंगे तो खुद के व्यवसाय का उदाहरण देते हुए सलाह देंगे तो लोग इस बारे में अधिक अच्छे से समझ सकेंगे। केरल की यात्रा से ज्योति को जो अनुभव प्राप्त हुआ है वह इस अनुभव को आने वाले दिनों में महिला समूहों को आर्थिक रूप से मजबूत करने में इस्तेमाल करेंगी। उनका मानना है कि केरल में महिलाएं अधिक पढ़ी-लिखी हैं। यदि यहां भी समूह की महिलाएं पढ़ी हों तो और तरक्की हो सकती है। ■

साभार : **पंचायतनामा**

सिलाई के लिए खरीदा मशीन

अन्य महिलाओं की तरह ही भालंती महतो के जीवन में भी उल्लेखनीय बदलाव आया है। भालंती मनोहरपुर प्रखंड के पंचपहिया गांव की निवासी हैं। उन्होंने दसवीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की है। वर्ष 2013 में उजाला स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। उनका मानना है कि समूह से न सिर्फ वो अकेली मजबूत हुई हैं बल्कि उनके पति और परिवार को भी इसका लाभ पहुंचा है। आज पति का भी अपना स्वरोजगार है। भालंती बताती है कि समूह से पहली बार तब जुड़ी जब पति पीलिया रोग से ग्रस्त थे। गांव में किसी से भी उन्हें सहायता नहीं मिली। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाये। किसी ने उन्हें बताया कि समूह से ऋण मिलता है तो पति के इलाज के लिए ऋण लिये। चूंकि भालंती सिलाई-कढ़ाई जानती थी इसलिए ऋण लिये पैसों को लौटाने के लिए एक सिलाई कढ़ाई करने वाले दुकान में काम करने लगी। पति-पत्नी दोनों एक की पेशा में थे तो दोनों मिल कर पैसे कमा ले रहे थे। लेकिन कुछ समय बाद भालंती को स्वयं किसी रोग के इलाज के लिए फिर से पैसों की जरूरत पड़ी। जरूरत तो पूरी हो गई और इलाज भी हो गया लेकिन पैसों की बार बार जरूरतों को देखते हुए भालती को लगा कि बाहर काम करने के बावजूद वह अच्छी आय नहीं अर्जित कर पा रही हैं तो उन्होंने समूह से तीसरी बार फिर ऋण लिया स्वयं का सिलाई मशीन खरीद कर अपना काम प्रारंभ किया। इन पैसों का इस्तेमाल उन्होंने सेकेंड हैंड सिलाई और इंटरलाकिंग मशीन खरीदने में किया। आज घर पर ही भालंती सिलाई का काम करती हैं जिससे उन्हें प्रत्येक माह 3000 से 4000 रुपये तक की आमदनी हो जाती है। ■

साभार : **पंचायतनामा**

समूह से मिले कर्ज से खोली दुकान, हुईं आत्मनिर्भर

रांची जिले में नामकुम प्रखंड का एक गांव है नचलदाग। गांव में प्रवेश करते ही जैसे ही गांव की आबादी प्रारंभ होती है, एक बड़ा बरगद का पेड़ दिखता है। ठीक इस पेड़ के नीचे रोजमर्रा की जरूरतों वाली एक दुकान है। दुकान में एक महिला ग्राहकों को सामान देने में व्यस्त है। इस महिला ने जिंदगी की तमाम बाधा को पार करते हुए अपने घर की आर्थिक हालात को बदल डाला और अपनी एक नयी सामाजिक पहचान बनायी। इस महिला का नाम यशोदा देवी है और इनकी पहचान समूह की एक सक्रिय महिला के रूप में होती है।

परेशानी का धैर्य से किया सामना

यशोदा मूलतः झारखंड के सिमडेगा जिला की रहने वाली हैं। करीब 25-26 साल पहले वह विवाह कर रांची जिला के नामकुम प्रखंड के इस गांव में आयी थीं। जब वह अपने ससुराल आयीं तो घर की आर्थिक स्थिति काफी कमजोर थी। वह एक साल अपने ससुराल में रही और फिर अपने नैयहर चली आयीं। एक साल नैयहर में रहीं। ससुराल की खराब आर्थिक स्थिति को देखते हुए उन्होंने पिता से आर्थिक सहायता की मांग की। पिता से आर्थिक सहायता प्राप्त कर यशोदा और उनके पति ने एक आटा चक्की लगायी। इस आटा चक्की से दोनों ने अपने रोजगार की शुरुआत की थी। इस गांव में आजीविका मिशन द्वारा वर्ष 2003 के आसपास महिलाओं को समूह बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा था। समूह बनाने के लिए यशोदा ने प्रशिक्षण लिया और चांद महिला समूह का गठन किया। यह गांव का पहला महिला समूह था। समूह में उन्होंने दूसरी गरीब महिलाओं को भी जोड़ा और प्रशिक्षण में बतायी गयी बातों के अनुसार काम किया।

बचत के लिए महिलाओं में लायी जागरुकता

यशोदा अपनी बातों के क्रम में यह बताती हैं कि

यशोदा देवी

जब प्रारंभ में महिला समूह बनाने की बात उन्होंने की, तो गांव के लोगों ने बात को गंभीरता से नहीं लिया था। पांच दस रुपये की बचत को मजाक समझा जाता था। कई महिलाएं चूंकि मजदूरी में व्यस्त होती थीं तो उनके पास पैसा होता तो था, लेकिन समूह बना कर बचत करने के विषय पर गंभीर नहीं थी। वे सब कहती थीं कि पैसा को बैंक में ही जमा करेंगे तो अच्छा रहेगा। वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसी महिलाएं थीं, जिन्हें किसी प्रकार का रोजगार नहीं था और यह पांच रुपया उनके लिए बहुत मायने रखता था। इसलिए उन्होंने समूह में शामिल होने के लिए तुरंत सहमति दे दी और बचत करना प्रारंभ कर दिया। समूह की नियमित बैठक में इन महिलाओं ने बहुत गंभीरता से भाग लिया और बचत के पैसों का सही इस्तेमाल करना सीखा। साथ ही उन्हें सामाजिक मुद्दों पर भी जानकारी दी जाने लगी। इसका परिणाम था कि जहां एक ओर ये महिलाएं आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त हो रहीं थीं, वहीं दूसरी ओर अन्य महिलाओं ने भी समूह बनाने पर विचार करना शुरू कर दिया था। आज इस गांव में लगभग 11 समूह चल रहे हैं। यशोदा के अनुसार गांव में कुल 200 घर हैं और लगभग सभी घरों की महिलाएं समूह से जुड़ी

हुई हैं। इन समूहों की देखरेख में यशोदा का महत्वपूर्ण योगदान है। इन समूहों में सात समूह पुराने हैं, जिन्हें जोड़ कर ग्राम संगठन बनाया गया है। इसका नाम नचलदाग महिला आजीविका ग्राम संगठन रखा गया है।

आंध्रप्रदेश के भ्रमण से मिला उत्साह

यशोदा बताती हैं कि वर्ष 2012 में महिला समूह को और अच्छे तरीके से काम करने के लिए आंध्रप्रदेश से दीदी आयीं। इन लोगों ने समूह की सदस्यों को समूह के सुचारु संचालन के लिए प्रशिक्षण दिया। महिलाओं को पुस्तक के लेखा-जोखा, ऋण लेनदेन, समूह में बचत और पैसों का इस्तेमाल करने के संबंध में जानकारी दी गयी। समूह चलाने में यशोदा हमेशा सक्रिय रहीं। प्रशिक्षण के बाद उनके कामों को देखते हुए उनका चयन सक्रिय महिला के रूप में हुआ। तब यशोदा को महिला समूह बनाने के साथ उन्हें प्रशिक्षण देने की जिम्मेवारी सौंपी गयी थी जिसका निर्वाह वह आज बखूबी कर रही हैं। आंध्रप्रदेश की दीदी लोगों के साथ यशोदा ने सहेरा गांव में 15 दिनों तक महिलाओं को प्रशिक्षण दिया। इसके बाद समूह के कार्यकलाप की व्यापक स्तर पर समझ बनाने के लिए उनका चयन जब आंध्रप्रदेश भ्रमण के लिए किया गया तो यह क्षण उनके लिए सबसे सुखद था। यह पहला मौका था जब वो अपने राज्य से दूसरे राज्य गयी थीं। आंध्रप्रदेश भ्रमण के दौरान यशोदा ने कई ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण किया और समूह के कार्यकलाप को बारीकी से समझा। उनके शब्दों में ''जिंदगी में सोचे ही नहीं थे, जहां बाप-दादा नहीं पहुंचे थे, वहां जाने का मौका मिलेगा।'' आंध्रप्रदेश से लौटने के बाद यशोदा ने चार नये समूह बनाये हैं और इन समूहों को प्रशिक्षण भी दे रही हैं। समूह को ऋण लेन-देन, पुस्तक संचालन, बचत आदि की जानकारी दी जाती है साथ ही सामाजिक मुद्दों विशेष कर महिला स्वास्थ्य, महिला हिंसा, गांव के स्कूल का नियमित संचालन, इंदिरा आवास योजना, मनरेगा योजना, आंगनबाड़ी जैसी सभी विषयों पर जानकारी देकर इन महिलाओं को अपडेट रखा जाता है।

आत्मविश्वास ने बदले दिन

यशोदा के आत्मविश्वास ने उनके दिन बदले हैं। अपने पारिवारिक जीवन पर चर्चा करते हुए वह बताती हैं कि उनके दो बेटा और दो बेटी हैं। बड़ी बेटी का विवाह कर दिया है। बाकी बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। वह अपने बच्चों को उच्च शिक्षा देने के लिए प्रयासरत हैं। एक नये सामाजिक पहचान बनने के विषय पर वह कहती हैं : गांव में लोगों में एक अलग पहचान बनी है। वह बताती हैं कि उन्होंने दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त की है, लेकिन किसी कारणवश मैट्रिक की परीक्षा नहीं दे सकी। उनके मन में आज भी मैट्रिक की परीक्षा देने का उत्साह बना है। अपने पूर्व के दिनों को याद करते हुए वह बताती हैं कि अब तो खेतीबाड़ी भी करती हैं। दूसरे की जमीन को खेती के लिए ली है। वर्तमान में यशोदा अपने पति और बच्चों के सहयोग से दो दुकान का प्रबंधन कर रही हैं। ■

साभार : **पंचायतनामा**

गरीबी को बनाया हथियार
समूह ने किया दर्द का उपचार

एक संपन्न परिवार की लड़की का विवाह गरीब परिवार में मात्र इस कारण से कर दिया गया कि वो अपनी तीन बहनों की अपेक्षा सुंदर नहीं थी। युवती से बड़ी दो बहनों की शादी हो चुकी थी और पिता ने अपने सबसे छोटी बेटी का रिश्ता करने में किसी प्रकार की कठिनाई ना आये इसलिए इस युवती की शादी एक ऐसे परिवार में करने के लिए राजी हो गये जिसकी आर्थिक स्थिति इस परिवार की अपेक्षा बहुत कमजोर थी। पिता की मजबूरी को देखते हुए इस लड़की ने शादी के लिए हामी भर दी।

वर्ष 2001 में युवती की शादी हो गयी और ससुराल जाने पर उसने पाया कि वहां की आर्थिक स्थिति बहुत अधिक खराब है। खेती-बाड़ी से घर का खर्च चल रहा था। सास-ससुर अधिकतर बीमार ही रहते थे सो दवा-इलाज का खर्च अलग। युवती ने शादी के बाद के चार साल आर्थिक अभाव में गुजारे। लेकिन इस युवती ने वर्ष 2005 में समूह से जुड़ कर जिस तरह से अपने घर की आर्थिक स्थिति में बदलाव लाया वह अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा और एक बेहतरीन मिसाल है। रांची जिले के अनगड़ा प्रखंड के जर्राकोली गांव की इस महिला का नाम अनीता देवी है। अनीता कहती हैं : हालत ऐसी थी कि साल में एक अच्छी साड़ी भी नहीं हो पाती थी। मायके से तेल, साबुन का इंतजाम होता था। दीदी के बच्चों के कपड़े अपने बच्चों को पहनाती थी। मां बाप पर निर्भर रहना अच्छा नहीं लगता था। अनीता बताती हैं कि गांव में समूह पहले से चल रहे थे, लेकिन समूह होता क्या है, कैसे काम करता है और इससे जुड़ने का क्या लाभ है इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। दूसरी महिलाओं से भी सलाह मिली कि समूह से

जुड़ने से लाभ ही होता है। जब समूह से जुड़ी तो पता चला कि इसके क्या लाभ हैं। पहले से चल रहे समूह में सिलाई का प्रशिक्षण दिया जा रहा था तो किसी तरह यहां प्रशिक्षण प्राप्त किया। उसके बाद समूह से ऋण लेकर सिलाई मशीन खरीदी और सिलाई-कढ़ाई के काम को व्यावसायिक रूप दिया। साथ में खेती-बाड़ी के लिए भी ऋण लिया और अब तो पति भी खेती का प्रशिक्षण आजीविका मिशन के सहयोग से प्राप्त कर रहे हैं।

सक्रिय महिला के रूप में आंध्रप्रदेश भ्रमण का मिला मौका

अनीता ने समूह में एक सक्रिय महिला के रूप में अपनी पहचान बनायी और तब इनकी प्रतिभा को देखते हुए इन्हें समूह के गठन और संचालन करने संबंधी जानकारी हासिल करने के लिए आंध्रप्रदेश का भ्रमण करने का मौका मिला। यहां आंध्रप्रदेश में बनाये गये समूह की सक्रिय महिलाओं से काफी सूक्ष्मता से समूह संचालन पर जानकारी मिलने के साथ एक बेहतरीन मौका प्रशिक्षण के लिए मिला। सक्रिय महिला के रूप में पहचान स्थापित करने के बाद अब ये राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में समूह का गठन करवाने और समूह में शामिल महिलाओं को समूह के संचालन का प्रशिक्षण

देने का काम भी कर रहीं हैं। समूह का ऑडिट करने से मिला नया आत्मविश्वास अनीता को वाणिज्यिक शब्दावली तथा ऐसे कामों की अच्छी जानकारी है। वो कहती हैं : बुंडू में नौ नये समूह बनाये और तीन पुराने समूहों को प्रशिक्षण देने के साथ उनमें से दो समूहों का ऑडिट भी किया। उनसे यह पूछे जाने पर कि ऑडिट करना क्या है वह फटाफट जवाब देती हैं कि समूह का रजिस्टर देखना, पासबुक देखना, प्राप्ति और भुगतान की जांच, आय और व्यय, संपत्ति और दायित्व आदि की जांच आदि ऑडिट के काम के अंतर्गत आते हैं। अनीता ने महज मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की है, लेकिन वाणिज्यिक ज्ञान इनके व्यक्तित्व को और भी प्रभावशाली बना देता है। अनीता से यह सवाल किये जाने पर कि आज आपके पिता की आपके बारे में क्या सोच है, वह कहती हैं : पिता जी कहते हैं कि जिसको नजरअंदाज किया वही आगे निकली और गर्व करते हैं। अनीता का लक्ष्य अब गांव की महिलाओं को समूह से जोड़ कर उनकी गरीबी दूर करना है और यह काम उन्हें गहरा आत्मसंतुष्टि देता है।

समूह से सीखी साप्ताहिक बचत

गरीबी से जुड़ी एक दास्तान और इसके खिलाफ लड़ी गयी जंग अनगड़ा प्रखंड की एक और अनीता देवी की भी है। ये संयोग ही था कि साक्षात्कार किये गये दोनों महिलाओं का नाम समान है। अनीता बताती हैं कि पालन पोषण में कभी कोई कमी नहीं हुई थी, लेकिन शादी के बाद ससुराल में आर्थिक कमी के कारण जीना आसान न था। लेकिन पति का घर कुछ भी हो लड़की का अपना घर हो जाता है। अनीता ने एक विश्वास के साथ अपने घर को समेटना प्रारंभ किया। उस घर में खुशहाली लाने का हर संभव प्रयास करने लगी। और, इस प्रयास में झारखंड आजीविका मिशन ने साथ दिया। अनीता बताती हैं कि पति की एक बार बहुत ज्यादा तबीयत खराब हो गयी थी। पैसे नहीं थे। अंततः सोने की कान की बाली बेचनी पड़ी और पति का इलाज कराया। इसी दरम्यान एक महिला ने समूह की चर्चा की तब समूह के बारे में जाना। समूह बनाने की जानकारी लेकर जब मुहल्ले की महिलाओं से मिली और यह बताया कि समूह क्या होता है, कैसे काम करता है, किस प्रकार साप्ताहिक 10 रुपये बचत की जा सकती है तो महिलाओं का जवाब था कि इतनी बचत से क्या होगा और इस योजना को नकार दिया। तब दूसरे मुहल्ला और टोलों में गयीं और बताया कि समूह बनायें और बचत करें। कुछ महिलाएं समूह बनाने के लिए तैयार हो गयीं। वर्ष 2008 में समूह खड़ा कर दिया गया था और ऋण के लेन-देन का काम प्रारंभ किया गया।

समझा एक कदम आगे बढ़ना क्या है

समूह बनाकर अनीता ने ऋण का लेन-देन किया जो काफी सफल रहा। ऋण लेनदेन की समझ आयी और आत्मविश्वास बढ़ा। तब समूह से 10,000 रुपया ऋण लिया और पति के पुराने दुकान में पूंजी लगायी। पूंजी लगाने से दुकान में सुधार आया। वह कहती हैं कि मसाले की हमारी दुकान थी ही उसके बाद उसे बढ़ाने के उद्देश्य से पति के लिए एक पुराना स्कूटर भी खरीदा जिसके लिए समूह से ही पैसा ऋण के तौर पर लिया था। अब पति दूर के हाट बाजार में भी जाने लगे। जब इस ऋण को वापस जमा करने का समय आता तो अनीता को हमेशा यह अहसास होता कि उन्होंने एक कदम आगे बढ़ाया है। वह कहती हैं : हम पति-पत्नी मेल से काम करते हैं, खर्च कम किया और बचत अधिक। इसके बाद एक पुराना ऑटोरिक्शा खरीदा। पति ऑटोरिक्शा भी चलाते हैं तो ऑटोरिक्शा चला कर अर्जित की जाने वाली राशि को समूह का ऋण चुकाने में दिया जाता है। अनीता ने समूह से जुड़ कर एक सफल उद्यमी के रूप में पहचान बनायी है। वे अपने समूह की पुस्तक संचालन का भी काम करती हैं। उनके शब्द इस प्रकार हैं : समूह मां की तरह है। जिस तरह बच्चा की आंखों से आंसू निकलता है तो मां अपने आंचल से पोंछ देती है, उसी तरह तकलीफ के समय समूह एक मां की तरह ख्याल रखती है। ■

साभार : **पंचायतनामा**

मां ने लिया समूह से ऋण, बेटी को बनाया स्वावलंबी

शिकोह अलबदर

रांची जिले के नामकुम प्रखंड से रिंग रोड पर जायें। यहां से कुछ दूरी पर एक रास्ता नचलदाग गांव की ओर मुड़ जाता है। शहर से करीब चालीस किलोमीटर दूर एक सुदूरवर्ती गांव है : नचलदाग। गांव में कुछ अद्भुत बदलाव हुए हैं। गांव की सामाजिक, आर्थिक स्थिति बदल रही है। ना सिर्फ आर्थिक और सामाजिक बदलाव यहां हुए हैं, बल्कि ग्रामीणों की जीवनशैली में आ रहे बदलाव भी प्रशंसनीय है। गांव की इस बदलती शक्ल में महत्वपूर्ण भूमिका महिलाओं की है। इस गांव में घूमने के दौरान मेरी नजर एक खपरैल मकान पर टिक जाती है। मकान के बरामदे वाले एरिया में इसकी एक दीवार पर लिखा मिलता है - न्यू प्रीति लेडिज हर्बल ब्यूटी पार्लर। बरामदे से सटे कमरे में एक ब्यूटी पार्लर है। चलिए, अब आप को अंदर ले चलते हैं। यह ब्यूटी पार्लर शहर के ब्यूटी पार्लर जैसा भव्य चमचमाता हुआ तो नहीं है, लेकिन यहां आपको ब्यूटी के सभी प्रोडक्ट जरूर मिल जाते हैं। पार्लर में एक कुर्सी लगी हुई है। सामने बड़े आकार का एक आईना। कोने में बिंदी, जुड़ा, लिपस्टिक, लेडिज रूमाल, हेयर बैंड, किलिप करीने से सजा कर रखे गये हैं। एक ओर शैंपू, नेल पॉलिश, कई तरह के फेशियल क्रीम रखे हैं। और हां, एक कोने में ब्रांडेड कंपनी का हेयर ड्रायर भी है - बाल सुखाने के लिए। पार्लर में बड़े आकार के कैटरीना, माधुरी जैसी बड़ी फिल्मी नायिकाओं के पोस्टर लगे हैं-दुल्हन वाली पोज में। प्रोडक्ट के साथ साथ तमाम तरह की सुविधाएं भी यहां मिलती हैं। फेशियल, थ्रेडिंग, बाल कटिंग और तमाम तरह की ब्यूटी सुविधाएं। इसके साथ ही एक रेट लिस्ट भी दीवार पर चिपकी है। फेशियल 150 रुपये से 250 रुपये, थ्रेडिंग 15 रुपया, बाल कटिंग 35 रुपये से 65 रुपये तक।

लक्ष्मी देवी एवं उनकी बेटी प्रीति

लेकिन सबसे जरूरी बात जिसे मैंने जानने की कोशिश की वह यह थी कि - आखिर किसका है यह ब्यूटी पार्लर। एक सुदूरवर्ती गांव में कौन चलाता है यह ब्यूटी पार्लर। पता चला गांव की एक महिला हैं जो झारखंड राज्य आजीविका प्रमोशन सोसाइटी द्वारा चलाये जा रहे समूह से जुड़ी हुई हैं। नाम है लक्ष्मी देवी। यह ब्यूटी पार्लर उनकी बेटी प्रीति चलाती हैं। लक्ष्मी ने समूह से जुड़ कर बचत के गुण सीखे, समूह से ऋण लिया और बेटी के लिए स्वरोजगार का रास्ता खोला। समूह से मिली सहायता और एक महिला का स्वावलंबी होने की दिशा में उठे सवालों पर उभरी उत्सुकता को शांत करने के लिए लक्ष्मी से मुलाकात की। लक्ष्मी बताती हैं कि 2005 में वह सरस्वती महिला समिति से जुड़ी थीं। समूह में पैसा जमा कर बचत करना प्रारंभ किया था और 1000 रुपया बचत किया था। इस समूह को अच्छी बचत और महिलाओं की जरूरत को देखते

हुए ऋण प्रदान किया गया था, जिसमें से दस हजार रुपया बतौर ऋण लिया। वह कहती हैं : बेटी चूंकि ब्यूटीशियन का कोर्स कर रही थी और अपना रोजगार करना चाहती थी तो ये पैसा उसे दे दिया। लक्ष्मी कहती हैं : जब गांव की लड़की शहर में जाकर ब्यूटीशियन का काम करती हैं तो गांव की गांव में ही आयेगी ना।

प्रीति जैन कॉलेज, धुर्वा से राजनीति शास्त्र में बीए कर रही हैं। उनसे ब्यूटी पार्लर की शुरुआत करने के संबंध में पूछे जाने पर वह बताती हैं कि उनके मन में हमेशा इस बात का अहसास था कि कुछ करना है। वह मानती थीं कि यदि किसी हुनर को जान लिया जाये तो उससे रोजगार मिल सकेगा। इसलिए ब्यूटीशियन का कोर्स किया। साथ ही अपनी पढ़ाई भी चालू रखी है। वह बताती हैं कि ब्यूटीशियन कोर्स करने के लिए गांव से तुपूदाना जाना पड़ता था। तुपूदाना के एक ब्यूटीशियन संस्थान से कोर्स किया और वहीं काम भी करने लगी। सुबह नौ बजे तुपूदाना के लिए निकल जाती थी। उस समय एक ऑटो ही चला करता था। सुबह जाती थी तो शाम में लौटती थी। काम सीखने के समय काफी परेशानियां भी हुई थी, लेकिन बाद में अपने ब्यूटी पार्लर की शुरुआत करने की सोची। प्रीति बताती हैं कि अपना रोजगार करने से आज उन्हें काफी संतुष्टि है। वह कहती हैं : मेरे दिमाग में हमेशा यह बात आती थी कि यदि गांव की लड़की शहर इसी काम के लिए जाती है तो इसी गांव और आसपास के गांव की लड़कियां भी यहां जरूर आयेंगी। उन्हें दूर नहीं जाना पड़ेगा। इस पार्लर को खोले तीन महीना हुए हैं और अब लोगों के बीच यह प्रसिद्ध हो रहा है।

प्रीति बताती हैं कि मां के दिये पैसों से ब्यूटी पार्लर के लिए चेयर और ब्यूटी प्रोडक्ट जैसे क्रीम, लोशन और इससे जुड़ी सभी वस्तुओं की खरीद की। प्रीति कहती हैंः आम दिन में 10 रुपये से 50 रुपये तक आमदनी हो जाती है, वहीं त्योहार के दिनों में प्रतिदिन 500-600 रुपये तक की आमदनी हो जाती है। यहां दुल्हन सजाने और मेहंदी लगाने का भी काम किया जाता है। लक्ष्मी मानती हैं कि आजीविका मिशन का उनके सपनों को पूरा करने में महत्वपूर्ण योगदान है। उनका कहना है : सोच भी नहीं पाये थे कि इतना आगे बढ़ सकेंगे। महिला समूह से ही यह मदद मिल सकी है। ■

साभार : **पंचायतनामा**

नौकरी न मिली तो शुरू किया बिजनेस, बनीं झारखंड की सफल महिला उद्यमी

श्रीलता बिश्वास

पढ़ाई पूरी करने के बाद आज के युवा नौकरी खोजने की शुरुआत करते हैं, अगर उन्हें नौकरी नहीं मिलती तो वो जिंदगी से हताश हो जाते हैं लेकिन झारखंड की अनीता देवी ने हार नहीं मानी और दूसरों के लिए ऐसा उदाहरण बनीं कि आज सैकड़ों लोगों को रोजगार दे रहीं हैं। हम आपको बताने जा रहे हैं कैसे अनीता देवी ने नौकरी नहीं मिलने पर सफलतापूर्वक लघु उद्योग शुरु कर दिया।

झारखंड में गुमला जिले के अति पिछड़े इलाके बिशुनपुर में अनीता देवी का घर है। छोटी जगह से होने के बावजूद उन्होंने ग्रेजुएशन तक की पढ़ाई पूरी की और प्रतियोगी परीक्षाएं देना शुरू कर दिया, लेकिन उन्हें हर जगह से निराशा ही मिली। जिसके बाद अनीता देवी ने अपने गांव में घर पर अचार बनाकर बेचने का काम शुरू किया।

अनीता ने अचार की अलग-अलग रेसिपी बनाई जिसे खूब पसंद किया गया। जब धीरे-धीरे अनीता का काम बढ़ता गया तो उन्होंने अपने गांव की ही कई महिलाओं को अचार

बनाने के काम पर रख लिया, इसका एक फायदा तो यह हुआ कि गांव से कई महिलाओं का पलायन रुक गया।

अनीता ने बताया कि शुरुआत में ज्यादा पैसे नहीं होने की वजह से उन्होंने अपने गांव से ही सारी सामग्री इकट्ठी की जो कि आसानी से मिल जाती थी। अनीता के इस व्यवसाय से गांव की कई महिलाएं और युवतियों को रोजगार मिल गया है। इस छोटे व्यावसाय में उनके पति अरुण गिरी ने उनका पूरा साथ दिया।

अनीता देवी ने बताया कि वन उत्पाद पर आधारित जामुन सिरका, जामुन बीज चूर्ण का निर्माण करती है, जो शरीर में बिना साइड इफेक्ट के शुगर और पेट की कई बीमारी में काम करता है। वहीं आंवला पाउडर, आंवले का रस और विभिन्न प्रकार के अचारों का निर्माण घरेलू विधि से करती हैं। जिसे वह सरकार द्वारा लगने वाले विभिन्न मेले में बेचती हैं।

झारखंड सरकार ने अनीता देवी को 2016-2017 में सफल महिला उद्यमी का प्रथम पुरस्कार भी दिया है। ■

साभार : **www.amarujala.com/education/success-stories**

स्वशासन और स्वावलंबन की ओर बढ़ते कदम

हमारा देश एक लोकतांत्रिक राष्ट्र है। अतः लोकतंत्र की शुरुआत ग्राम सभा से होनी चाहिए। लेकिन 70 सालों के बाद भी स्थिति जस की तस है। देखा जाए तो असली गणतंत्र हमारे गांवों विशेषकर शेड्यूल्य क्षेत्र में सदियों से स्थापित था, लेकिन बदलते समय में गांव गणराज्य की प्रक्रिया शिथिल पड़ गई। लोकतंत्र से हमारे गांव दूर होते चले गए। इन्हीं वजहों से 'संवाद' द्वारा गांव तक लोकतंत्र को पहुंचाने के लिए गांव गणराज्य की न केवल समझ विकसित की, बल्कि लोकतंत्र की वास्तविक प्रक्रिया चलाने की दिशा में कदम भी उठाए हैं।

इस कड़ी में ग्राम-सभा सचिवालय की स्थापना एवं ग्राम-सभा की स्थाई समितियों की बैठकों की गतिविधियां चलाई जा रही हैं। ग्राम सचिवालय की स्थापना करने से एक ओर जहां ग्रामवासी अंचल व प्रखंड कार्यालयों के

चक्कर लगाने से बच सकेंगे, वहीं स्थानीय स्तर पर ग्राम स्तर के तमाम मुद्दों/समस्याओं का समाधान हो सकेगा।

अपने इसी सोच के साथ 'संवाद' द्वारा राज्य के 200 ग्राम सभा में पांच स्थाई समितियों एवं ग्राम सचिवालय के गठन का लक्ष्य रखा गया है। प्रत्येक स्थाई समिति में कुल चार सदस्य चुने जाने का प्रावधान है। दिसम्बर 2020 तक 200 ग्राम सभा सचिवालयों में से 199 ग्राम सचिवालय एवं इतने ही ग्राम सभा में स्थाई समिति के करीब 3,980 सदस्यों का चुनाव किया जा चुका है। फिलहाल उन तमाम सदस्यों को

उनके कामों की जानकारी मुहैया कराई जा रही है। इन तमाम गांवों में सचिवालयों का फिलहाल गठन हो चुका है। उसे पूरी तरह से सक्रिय बनाने का प्रयास जारी है।

ग्राम सभा को सक्रिय बनाने के लिए राज्य में 'पेसा' कानून का लागू होना अतिआवश्यक है। देखा जाए तो पेसा कानून 1996 में ही बन चुका है लेकिन उसे धरातल पर उतारने के लिए अभी तक नियमावली तक नहीं बन पाई है। नियमावली बनाने और उसे लागू करने के लिए स्थानीय एवं राज्य स्तर पर फेडरेशन का गठन किया गया है। संताल परगना, उत्तरी छोटानागपुर, दक्षिण छोटानागपुर एवं कोल्हान जोन के फेडरेशन कार्यरत हैं और पूर्व में इन्हीं चारों फेडरेशन द्वारा चयनित और नामित सदस्यों को मिलाकर राज्य स्तरीय फेडरेशन का गठन किया जा चुका है। 'पेसा' कानून का वैकल्पिक नियमावली बनाने का काम ग्राम सभा फेडरेशन द्वारा किया जा रहा है। नियमावली बनाने के बाद उसे सरकार को सौंपने का काम फेडरेशन करेगी।

'संवाद' द्वारा स्वशासन के साथ-साथ टिकाऊ आजीविका के कई कदम उठाए हैं। इस सिलसिले में छह तालाबों का जीर्णोद्धार, एक लिफ्ट एरिगेशन, चेक डैम आदि का निर्माण कर संबंधित क्षेत्रों के हजारों किसानों की खेती का दायरा बढ़ाकर उनके उत्पादन बढ़ाने का काम किया जा रहा है। इससे फसलों के साथ-साथ सब्जी का भी उत्पादन बढ़ा है। रासायनिक खेती और इसके दुष्प्रभावों से देश दुनिया वाकिफ है। इसलिए जरूरी है किसान परिवारों का रुझान जैविक खेती की ओर हो, इसके लिए प्रयास किए जाएं। इसी कड़ी में 'संवाद' राज्य के करीब 400

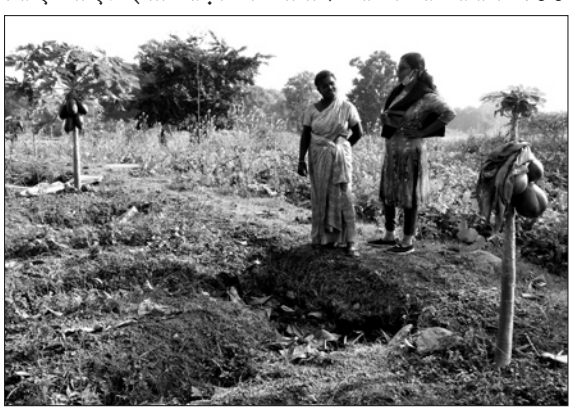

गांवों के 4000 किसान परिवारों को जैविक खेती की ओर वापस लौटाने के लिए प्रयासरत है। लगभग एक साल पूरा होने के बाद 129 गांवों के करीब 1200 किसान परिवार जैविक खेती अपना कर एक मिसाल पेश कर चुके हैं।

- सीमान्त सुधाकर/महेश मिश्रा

''कोरोना काल में मधुपुर'' पुस्तक का लोकार्पण

26 नवंबर 2020 को संविधान दिवस के अवसर पर चांदमारी रोड स्थित खेड़िया धर्मशाला सभागार में मधुपुर के कोरोना कर्मवीरों का एक दस्तावेज ''कोरोना काल में मधुपुर'' पुस्तक का सामूहिक लोकार्पण कोविड नियमों का पालन करते हुए किया गया। कार्यक्रम का संचालन शायर अबरार तबिंदा ने किया। कोरोना काल में संवेदना और सामर्थ्य के साथ पूरा मधुपुर डटा रहा। कोरोना काल में वंचितों और जरूरतमंदों को संकट से उबारने में कर्मवीरों द्वारा किये गए कार्यों को इस पुस्तक में सहेजा गया है ताकि आनेवाली पीढ़ी के लिये प्रेरणास्रोत बन सके। वरिष्ठ समाजकर्मी घनश्याम ने भारतीय संविधान में आदिवासियों के अधिकार दिलाने वाले मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा और डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के योगदान को याद कर नमन करते हुए कहा कि आज भी अपना व्यापक समाज संवेदनशील है। आज के युवा ज्यादा प्रतिबद्ध और ज्यादा समझदार हैं। कोरोना काल में युवाओं ने यह साबित कर दिखाया है। संकटकाल में युवा जान हथेली पर रखकर पीड़ित, व्यथित लोगों के बीच सामर्थ्य भर मदद लेकर पहुंचते रहे। इस चुनौतीपूर्ण घड़ी में युवा कर्मवीर बनकर उभरे। मधुपुर की साझी विरासत ने मधुपुर को फिर से गौरवान्वित किया है। आने वाले दिनों में कर्मवीरों को समारोह आयोजित कर सम्मानित किया जाएगा। पुस्तक को तैयार करने में 'संवाद', 'क्रिएटिव क्लासेस' और 'झारखंड अध्ययन केन्द्र सह शोध संस्थान' की महत्वपूर्ण एवं सक्रिय भूमिका रही।

- महेश मिश्रा

आग

अनुकंपा के रूप में
'एतवरिया उराइन'
नहीं चाहती
दफ्तरों में बाबुओं को पानी पिलाना,
चाय लाना,
और न ही चाहती है
अफसरों की फाइलें ढोना।

वह दफ्तर के लॉन में
सिर झुकाए, घूँघट काढ़े
नहीं चाहती रोपना
हरी-हरी दूब,
और न ही चाहती है
छँटनीग्रस्त होना।

इसलिए
एतवरिया उराइन, चलाती है
शावेल
शर्ट, पैंट, टोपी पहने
ओपन माइंस में।

हर विस्फोट के बाद फुरती से
शावेल की स्टेयरिंग सँभालती
टनों कोयले उठाती
इन-पिट क्रशर में डालती
एतवरिया –
सुन नहीं पाती
अपनी चूड़ियों की खनक।
नहीं बिठा पाती सही जगह
पसीने से भींज गई माथे की बिंदी
इन-पिट क्रशर से निकल
कन्वेयर बेल्ट पर जाते देखती है
जब छोटे टुकड़े कोयलों के
सोचती है
वह भी कभी साबुत थी।
लेकिन वह यह भी जानती है
छोटे टुकड़ों में लगती है जल्दी
आग!!

- ग्रेस कुजूर

इला रमेश भट्ट

इला रमेश भट्ट (जन्म - 7 सितंबर 1933) भारत की एक प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता हैं जिन्होंने भारत की महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया।

भारत के पहले मज़दूर संगठन कपड़ा कामगार संघ के महिला प्रकोष्ठ के नेतृत्व से 1968 में अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत करने वाली इला भट्ट अनौपचारिक क्षेत्र में श्रम करने वाली ग़रीब स्त्रियों को सम्पूर्ण रोज़गार दिलाने में अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभायी हैं। सेल्फ़ इम्पलॉयड वुमॅन एसोसिएशन (सेवा) की शुरुआत इला भट्ट ने 1971 में केवल सात सदस्यों के साथ की थी। आज इसके साथ तेरह लाख से ज्यादा स्त्रियाँ जुड़ी हैं। यह संगठन अनपढ़ कामगार महिलाओं का अपना बैंक चलाता है जिसके ज़रिये औरतों को स्वरोज़गार के लिए पूँजी मुहैया करायी जाती है। यह नारी आंदोलन, मज़दूर आंदोलन और सहकारिता आंदोलन का एक संगम है।

इला बेन की सेवा सिर्फ गुजरात, या फिर भारत तक ही सीमित नहीं रही। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी महिलाओं को और भी ताक़तवर बनाने के लिए खूब मेहनत की। ईला भट्ट ने 1979 में ईस्थर ओक्लो और मिशैला वाल्श के साथ मिलकर 'वुमन वर्ल्ड बैंकिग' नाम की संस्था की भी स्थापना की एवं वे साल 1980 से 1988 तक इस अंतर्राष्ट्रीय संस्था की अध्यक्ष रहीं।

इला भट्ट को साल 1977 में 'सामुदायिक नेतृत्व श्रेणी' में 'मेग्सेसे पुरस्कार' दिया गया। साल 1984 में उन्हें स्वीडन की संसद ने 'राइट लाइवलीहुड' अवार्ड प्रदान किया। भारत सरकार ने उनकी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए 1985 में 'पद्मश्री' तथा 1986 में 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया। 2001 में हावर्ड यूनीवर्सिटी ने उन्हें 'आनरेरी डॉक्टरेट' की डिग्री प्रदान की। उन्हें वर्ष 2010 में जापान के प्रतिष्ठित 'निवानो शांति पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया। इला बेन को 2011 में शांति, निरस्त्रीकरण व विकास के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार भी मिला। इला भट्ट राज्य सभा की सदस्य तथा भारतीय रिजर्व बैंक के केन्द्रीय बोर्ड की निर्देशक भी रह चुकीं हैं। उन्होंने भारतीय योजना आयोग में सदस्य के तौर पर भी काम करते हुए महिलाओं के उत्थान और विकास के लिए नयी-नयी योजनाएँ बनवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।